हरिभूमि

भिवानी-दादरी भूमि

रोहतक, रविवार 15 फरवरी 2026

9 भारतीय सांस्कृतिक विरासत बहुत ही समृद्धः विकास

10 मेहंदी में करीना, रंगोली में साक्षी व पेंटिंग में ...

CHINAR FABRICS
Chinar Mill Showroom

चिनार मील शोरूम

नजदीक बासिया भवन, हांसी रोड, भिवानी M.: 70567-95900

सबसे सस्ता सबसे अच्छा मिल का माल

हमारे यहां सभी उच्च ब्रांडों के कपड़े उपलब्ध है व आधुनिक मशीनों द्वारा सिलाई भी की जाती है

कोट पैन्ट	ब्लेजर	वूलन शर्ट	जैकेट	शर्ट
1999/-	1499/-	799/-	699/-	499/-

खबर संक्षेप

त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव आज

बवानीखेड़ा। बवानीखेड़ा स्थित बाबा कमाल में 15 फरवरी रविवार को सायं साढ़े सात बजे प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज की शाखा बवानीखेड़ा द्वारा महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव मनाया जाएगा। शाखा प्रमुख राजयोगिनी बीके रेनू बहन ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्यतिथि बवानीखेड़ा विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि शिरकत करेंगे तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में नगर पालिका के चेयरमैन सुंदर अत्री करेंगे। मुख्यवक्ता के रूप में हांसी से राजयोगिनी बीके लक्ष्मी बहन उपस्थित होंगी।

साध-संगत ने बांटे जरूरतमंदों को कपड़े

भिवानी। डेरा सच्चा सौदा सिरसा ब्लॉक भिवानी की साध-संगत ने गुरू संत डा. गुरमीत राम रहीम सिंह इन्सां की पावन प्रेरणा से महारहमोकर्म माह में अति जरूरतमंद गरीब परिवारों के 100 बच्चों को गर्म वस्त्र प्रदान किए। इस अवसर पर सेवादार बहनें विनिता, पुष्पा, बिमला व अन्य बहनों ने गर्म वस्त्र वितरण कर मानवता भलाई कार्य की अलख जगाई।

900 क्यूसेक पानी कम मिलने के कारण जुई-निगाना फीडर रहेगी बंद

2200 की भेजी थी डिमांड, मात्र 1309 क्यूसेक ही मिला पानी, 150 गांव होंगे प्रभावित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी जिले की नहरों के लिए सिंचाई विभाग ने 22 सौ क्यूसेक पानी की डिमांड उच्चाधिकारियों को भेजी थी, लेकिन मुनक से पानी कम मिलने की वजह से जिले की नहरों को मात्र 1309 क्यूसेक पानी ही मिल पाया हैं। डिमांड से 900 क्यूसेक पानी की कमी के चलते सिंचाई विभाग ने जुई व निगाना फीडर को बंद कर दिया है। जुई और निगाना फीडर बंद रहने के कारण 150 गांव प्रभावित होंगे। फिलहाल पानी कम मिलने से नहरों का गणित गड़बड़ा गया है। वहीं पानी बढ़वाने की मांग को लेकर सिंचाई विभाग के अधिकारी लगातार मुख्यालय से संपर्क साध रहे हैं।

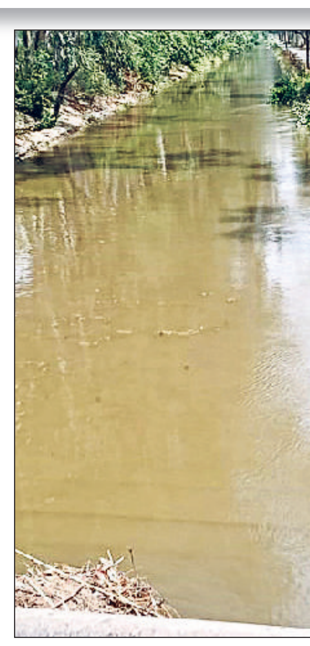

भिवानी शहर व ग्रामीण क्षेत्रों के जलघरों में धीरे धीरे पानी तलहटी में पहुंच रहा हैं। भिवानी शहर में चौधरी सुरेंद्र सिंह चिड़ियाघर के पीछे एक नंबर पुराना जलघर, दो नंबर डाबर कॉलोनी जलघर तथा तीन नंबर निनान जलघर से जलापूर्ति की जाती हैं और एक नंबर पुराना जलघर में मात्र दो तीन दिन का ही पानी शेष हैं। वहीं दो नंबर डाबरकॉलोनी जलघर व तीन नंबर निनान जलघर में भी लगभग एक सप्ताह का ही पानी शेष बचा हैं, ऐसे में शहर को राशनिंग के द्वारा पानी की सप्लाई दी जा रही हैं। अब डिमांड से कम मात्रा में पानी मिलने की समस्या उत्पन्न हो गई हैं, जिससे नहरों का गणित गड़बड़ा गया हैं। सिंचाई विभाग ने जिले की नहरों के लिए 22 सौ क्यूसेक पानी की मांग भेजी थी, लेकिन मुनक से पानी कम मिलने की वजह से फिलहाल जिले की नहरों के लिए 1309 क्यूसेक पानी मिला है, जिसके चलते सुंदर डिस्ट्रीब्यूटरी में साढ़े नौ सौ की जगह 941 तथा मिताथल फीडर में साढ़े तीन सौ की जगह 348 क्यूसेक पानी चल रहा है। फिलहाल जुई फीडर आ निगाना फीडर को बंद कर दिया है।

तोशाम व बहल में होगा असर

मिताथल फीडर से वाया प्रेमनगर होते हुए तोशाम क्षेत्र में जाने वाली निगाना फीडर पानी की कमी के चलते बंद रहेगी। ये नहर आगे चलकर बहल क्षेत्र में पानी की सप्लाई करती हैं। पानी की कमी के चलते जुई फीडर के साथ साथ निगाना फीडर बंद कर दी हैं, जिसके चलते तोशाम व बहल क्षेत्र के खेतों व जलघरों से पेयजल सप्लाई पर भी अच्छा खासा असर पड़ेगा। हालांकि निगाना फीडर में जुई फीडर के साथ पानी छोड़ा जाता है और पानी पूरा होने के बाद ही दोनों में पानी आ पाएगा।

शहर के जलघर जुई से जुड़े

भिवानी शहर के अधिकांश जलघर जुई फीडर के साथ जुड़े हुए हैं। फिलहाल जुई नहर में पानी नहीं छोड़ा गया। जुई नहर में पानी आने के बाद ही जलघरों तक पानी पहुंच पाएगा। भिवानी शहर के जलघरों में पानी कम बचा है और पब्लिक हेल्थ विभाग ने राशनिंग कर दी है। जनस्वास्थ्य विभाग द्वारा शेष पानी से काम चलाने के लिए क्षेत्रों में तीसरे दिन पानी छोड़ा जा रहा हैं। जब तक जुई नहर में पानी नहीं आ जाता तब तक पेयजल सप्लाई व्यवस्था बेपटरी ही रहेगी।

पिछले माह की अपेक्षा दस फरवरी तक आना था नहरी पानी

सिंचाई विभाग के अनुसार पिछले माह नहरों में पानी पहुंचा था, उस हिसाब से दस फरवरी तक पानी आ जाना चाहिए था, लेकिन पानी की देरी की वजह से जल संकट की स्थिति उत्पन्न हुई। इसके साथ ही 12 फरवरी को मूनक से पानी छोड़े जाने की सूचना है और मूनक से पानी पहुंचने में करीब 24 घंटे का समय लगता है, ये तब संभव है, जब यमुना से पूरा पानी मिले। सिंचाई विभाग के अनुसार 15 फरवरी तक पानी पहुंचने की उम्मीद है। डिमांड के हिसाब से मिल पाया तो ही जुई फीडर में 15 को ही पानी छोड़ा जाएगा, नहीं तो 20 फरवरी के आसपास ही जुई नहर को पानी मिल पाएगा।

धीरे-धीरे बढ़ रहा पानी : विकास

डिस्ट्रीब्यूटरी में पीछे से पानी कम मिला हैं और सुबह 1309 क्यूसेक पानी था। वे पानी बढ़वाने के लिए लगातार संपर्क में हैं। अब शाम के वक्त पानी 1500 क्यूसेक तक पहुंचा हैं। हालांकि अभी भी मांग के अनुरूप पानी कम ही हैं। अगले एक दो दिनों में मांग के हिसाब से पूरा पानी होने की उम्मीद हैं। जब तक पानी कम रहेगा, तब तक एक दो नहरे बंद रहेगी।

- **विकास जांगड़ा,** एसडीओ, सिंचाई विभाग

भिवानी। पद एवं गोपनीयता की शपथ लेते नवनिर्वाचित पदाधिकारी।

चांदीराम बने पीडब्ल्यूडी मैकेनिकल वर्कर्स यूनियन के जिला प्रधान

- यूनियन का जिला स्तरीय त्रिवार्षिक चुनाव हुआ संपन्न
- कमलजीत जांगड़ा को जिला सचिव, सतवीर सिंह राणा को जिला कोषाध्यक्ष चुना गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

हरियाणा गवर्नमेंट पीडब्ल्यूडी मैकेनिकल वर्कर्स यूनियन संबंधित हरियाणा संयुक्त कर्मचारी संघ का त्रिवार्षिक जिला भिवानी का चुनाव चिड़ियाघर रोड जिला यूनियन कार्यालय में संपन्न हुआ। चुनाव पर्यवेक्षक राज्य प्रधान ईश्वर सिंह शर्मा व राज्य उप प्रधान बलवान सिंह कालीरामण कि अध्यक्षता में हुआ। चुनाव में सर्वसम्मति से जिला प्रधान चांदीराम कादियान, जिला सचिव कमलजीत जांगड़ा, जिला कोषाध्यक्ष सतवीर सिंह राणा को चुना गया।

दिलवाई शपथ

प्रेस प्रवक्ता अमित जांगड़ा ने बताया कि चुनाव में विशेष रूप से राज्य के महासचिव सदंल सिंह राणा, राज्य कोषाध्यक्ष श्रीभगवान अहलावत, राज्य के मुख्य सलाहकार सज्जन कुमार भारद्वाज, राज्य के ऑडिटर जय भगवान पांचाल, राज्य के प्रचार सचिव अनिल बल्हारा, राज्य के प्रचार सचिव सरजीत खेड़ा, राज्य के कार्यालय सचिव राजकुमार सेन, राज्य के संगठन सचिव हरिकेश शर्मा, राज्य के सह सचिव दलबीर श्योराण ने विषेश रूप से भाग लिया व भिवानी जिले में कार्यरत जिले की सभी ब्रांचों के डेलिगेटस, प्रधान, सचिव व कोषाध्यक्ष आदि पदाधिकारियों ने चुनाव में भाग लिया। राज्य प्रधान ईश्वर सिंह शर्मा ने चुने गए नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई।

युवक अवैध पिस्तौल सहित गिरफ्तार, रिमांड पर लिया

चरखी दादरी। दादरी सीआईए स्टाफ ने एक युवक को अवैध पिस्तौल सहित गिरफ्तार किया है।आरोपी की पहचान उत्तर प्रदेश के गोंडा जिला निवासी करण के रूप में हुई है, जो फिलहाल झोझू कलां गांव में रहता था। पुलिस प्रवक्ता योगेश कुमार ने बताया कि शुक्रवार को सीआईए स्टाफ को सूचना मिली की कलियाणा मोड़ के समीप एक युवक अवैध हथियार सहित घूम रहा। जो किसी भी आपराधिक घटना को अंजाम दे सकता है। सूचना के बाद पुलिस टीम बताए गए स्थान पर पहुंची, जहां एक युवक दिखाई दिया। टीम ने युवक को काबू कर लिया। जिसकी तलाशी लेने पर देशी पिस्तौल बरामद हुआ। पुलिस ने कब्जे में लेकर आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार किया। पूछताछ के लिए आरोपी को 4 दिन पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

> देशी पिस्तौल बरामद की चार दिन के रिमांड पर लिया

एनएच 334बी पर मौत का जाल बना अजीबो-गरीब डिवाइडर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

दादरी से लोहारू मार्ग पर स्थित नेशनल हाईवे-334बी इन दिनों वाहन चालकों के लिए किसी दुःस्वप्न से कम नहीं है। गांव मांढ़ी-पिरानू बस स्टैंड के समीप बना डिवाइडर हादसों का केंद्र बन गया है, जिसे स्थानीय लोग मौत का जाल कह रहे हैं। इस सड़क की सबसे बड़ी खामी यह है कि यहां डिवाइडर बिना किसी पूर्व चेतावनी, संकेत बोर्ड या रिफ्लेक्टर के अचानक शुरू हो जाता है। यह डिवाइडर एक चढ़ाई (ढलान) पर बना है। रात के समय या धुंध में हेडलाइट की रोशनी में भी ड्राइवर को यह अंदाजा लगाना मुश्किल हो जाता है कि सड़क अचानक दो हिस्सों में बंटने वाली है। आमतौर पर डिवाइडर टोल प्लाजा या प्रमुख चौराहों पर होते हैं, लेकिन इस स्थान पर न तो कोई टोल है और न ही कोई स्पष्ट चौराहा। इस गंभीर मुद्दे पर सीएम पैक्स वेलफेयर एसो. हरियाणा के कार्यवाहक प्रधान प्रविंद्र मांढ़ी ने कड़ा रोष प्रकट किया है।

- गांव मांढ़ी-पिरानू बस स्टैंड के समीप बना डिवाइडर हादसों का केंद्र बन गया है

यहां कई बार हो चुके हैं हादसे, चेतावनी बोर्ड लगाए जाएं

प्रविंद्र मांढ़ी ने इसे प्रशासन और नेशनल हाईवे अथॉरिटी की बड़ी लापरवाही करार दिया है। मांढ़ी पिरानू के सरपंच प्रतिनिधि जितेंद्र और मांढी केहर के सरपंच अशोक कुमार ने भी अपनी चिंता जाहिर की है। उन्होंने कहा कि अधिकारियों की यह लापरवाही किसी बड़े हादसे का इंतजार कर रही है। बिना योजना के बनाया गया यह डिवाइडर अब तक कई वाहनों को क्षतिग्रस्त कर चुका है और मासूमों की जान के लिए खतरा बना हुआ है। उन्होंने मांग की कि इस योजनाहीन डिवाइडर को तुरंत यहां से हटाया जाए, यदि हटाना संभव न हो तो कम से कम उचित रिफ्लेक्टर, ब्लिंकर लाइट और चेतावनी बोर्ड लगाए जाएं, हादसों को रोकने के लिए सडक़ के डिजाइन में तकनीकी सुधार किया जाए। उन्होंने स्पष्ट चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही समाधान नहीं किया गया, तो वे सरकार और संबंधित विभाग के खिलाफ कड़ा कदम उठाने को मजबूर होंगे। फिलहाल यह डिवाइडर हाईवे पर तेज रफ्तार से चलने वाले वाहनों के लिए एक खुला निमंत्रण बना हुआ है।

प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने दुकानदारों के काटे चालान

भिवानी। हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की टीम ने जेई चंचल के नेतृत्व में प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक सामग्री एवं पॉलीथिन का उपयोग पर रोक लगाने एवं पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से शहर में विभिन्न स्थानों पर अभियान चलाया। इस दौरान सब्जीमंडी के पास छह दुकानों पर 4500 रुपये के चालान काटे। पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी शैलेंद्र अरोड़ा ने बताया कि शहर के प्रमुख

स्थानों पर जागरूकता बैनर भी लगाए गए हैं, जिनके माध्यम से सिंगल यूज़ प्लास्टिक के हानिकारक प्रभावों के बारे में आम जनता को जानकारी दी जा रही है। उन्होंने बताया कि सिंगल यूज प्लास्टिक सामग्री एवं पॉलीथिन का उपयोग पर्यावरण के लिए खतरा है। प्रदूषित पर्यावरण से हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अभियान के दौरान उन्होंने दुकानदारों से अपील की कि प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक एवं पॉलीथिन का प्रयोग न करें।

उच्च शिक्षा के लिए दी जाती छात्रवृत्तिः डीसी

- पात्र छात्रों का एनएसपी पोर्टल पर पंजीकरण करवाना सुनिश्चित करें : उपायुक्त

भिवानी। मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव एवं सेवा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव अरुण गुप्ता ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना के शैक्षणिक सत्र 2025. 26 के लिए पात्र विद्यार्थियों को ज्यादा से ज्यादा संख्या में 28 फरवरी तक पंजीकरण करवाए। योजना के तहत अनुसूचित जाति और पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। उपायुक्त साहिल गुप्ता ने कैंप कार्यालय में पोस्ट मैट्रिक स्कॉलरशिप योजना के जिला के नोडल अधिकारी व अन्य नोडल अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे निर्धारित तिथि तक ज्यादा से ज्यादा पात्र छात्रों का एनएसपी पोर्टल पर पंजीकरण करवाना सुनिश्चित करें। योजना के तहत दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे अनुसूचित जाति व पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थी इस योजना का लाभ उठा सकते हैं।

1200 किलोमीटर की यात्रा पूरी कर कावड़ लेकर नंदगांव पहुंचे नरेंद्र

साइकिलिस्ट दे रहे पर्यावरण संरक्षण व भाईचारे का संदेश

- साइकिल यात्रा के बाद कांवड़ लेकर अपने पैतृक गांव नंदगांव पहुंचे नरेंद्र यादव अब तक 21 हजार किलोमीटर की यात्रा कर चुके हैं

भिवानी। प्रयागराज संगम से कावड़ लेकर पहुंचे साइकिलिस्ट नरेंद्र यादव। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

गांव नंदगांव निवासी 53 वर्षीय साइकिलिस्ट नरेंद्र यादव ने पर्यावरण संरक्षण और मानव कल्याण का संदेश देते हुए अनूठी मिसाल कायम की है। उन्होंने करीबन 1200 किलोमीटर की साइकिल यात्रा कर प्रयागराज संग से कांवड़ लाकर अपने इस मिशन को और मजबूत किया है।

बता दें कि साइकिल यात्रा के बाद कांवेड़ लेकर अपने पैतृक गांव नंदगांव पहुंचे नरेंद्र यादव अब तक लगभग 21 हजार किलोमीटर की साइकिल यात्रा कर चुके हैं। गांव नंदगांव में पहुंचने पर साइकिलिस्ट नरेंद्र यादव का अनेक ग्रामीणों ने स्वागत किया। उन्होंने कहा कि नरेंद्र सच्चे पर्यावरण प्रहरी के रूप में उभरे हैं, जो अपनी शारीरिक क्षमता और दृढ़ संकल्प का उपयोग समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए कर रहे है। यह पहल निश्चित रूप से दूसरों को भी पर्यावरण के प्रति जागरूक होने और सामाजिक सद्भाव बनाए रखने के लिए प्रेरित करेगी। वहीं प्रयागराज संगम से कांवड़ लेकर पहुंचे साइकलिस्ट नरेंद्र यादव ने बताया कि एक व्यक्ति अपने जीवन में 15 पेड़ों की लकड़ी को कम से कम खर्च करता है। नरेंद्र यादव ने कहा कि हमें अपने जीवन में अधिक से अधिक पड़े लगाने चाहिएं। उन्होंने बताया कि अब तक वे कश्मीर से कन्याकुमारी, नंदगांव से बाघा बॉर्डर, भिवानी से नेपाल के काठमांडू, द्वारका, पोरबंदर, सोमनाथ, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, वाराणसी, कोलकत्ता, जगन्नाथपुरी, गंगासागर सहित चारों धामों की यात्रा पूरी कर चुके है।

> एक व्यक्ति अपने जीवन में 15 पेड़ों की लकड़ी को कम से कम खर्च करता है: नरेंद्र यादव

रिटायर्ड कर्मचारी एसो. ने लंबित मांगों को लेकर भरी हुंकार

- सरकार सिर्फ कागजी वादे कर कर्मचारियों के हितों से खिलवाड़ कर रही : बनीसिंह

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बाढ़ड़ा

कस्बे की अनाज मंडी में हरियाणा कर्मचारी वेलफेयर एसोसिएशन की अह्म बैठक आयोजित की गई जिसमें सरकार द्वारा उनकी लंबित मांगों का समाधान नहीं करने पर रोष प्रकट करते हुए सरकार को जल्द सुध लेने की मांग की। हरियाणा कर्मचारी वेलफेयर एसोसिएशन खंड प्रधान बनीसिंह की अध्यक्षता में आयोजित बैठक को जिलाध्यक्ष होशियार सिंह ने कहा कि सरकार बार बार पूर्व कर्मचारियों के सामने झूठे वायदे व दावे कर रही है।

पूर्व कर्मचारी शांतिप्रिय तरीके से अपनी आवाज उठाते हैं लेकिन सरकार केवल कागजी वायदे कर उनके हितों से खिलवाड़ कर रही है जो किसी सूरत में स्वीकार्य नहीं की जाएगी। उन्होंने प्रदेश सरकार द्वारा कर्मियों की अधर में लटकी एलटीसी को तुरंत बहाल करने, आंठवें पेंशन आयोग में पेंशन को भी शामिल किया जाए, महिला कर्मियों को भी तत्काल प्रभाव से एलटीसी का लाभ देने, प्रत्येक पूर्व कर्मचारी को 60 वर्ष, 70 वर्ष, 74 वर्ष व सौ वर्ष के लाभपात्रों को अलग अलग श्रैणियों में वेतनवृद्धि व अन्य लाभ जारी करने, की मांग की गई। बैठक में बाढड़ा खंड कार्यकारिणी चेयरमैन महेन्द्र पंचगावां, झोझू खंड प्रधान राम अवतार सिंह, बाढड़ा अध्यक्ष बनीसिंह, चेयरमैन नरेश कुमार झोझू आदि मौजूद रहे।

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

24.3% लोगों ने अपनी पहली सैलरी या व्यक्तिगत आय के बाद पहली बार सोना खरीदा, जबकि 23.9% ने इसे निवेश के रूप में चुना। यह ट्रेंड पीढ़ियों के व्यवहार में अंतर भी दिखाता है। जेन जी छोटे और व्यक्तिगत माइलस्टोन से सोने की खरीद शुरू कर रहे हैं, जबकि मिलेनियल्स इसे जीवन की बड़ी घटनाओं और दीर्घकालिक सुरक्षा से जोड़कर देखते हैं।

जेन जी और मिलेनियल्स की पहली पसंद बना सोना

इस समय सोना निवेश का बढ़िया विकल्प बनकर उभर रहा है। जेन जी और मिलेनियल्स यानी युवा भारतीयों का सोने पर भरोसा मजबूत बना हुआ है, लेकिन इसे खरीदने का तरीका धीरे-धीरे बदल रहा है। स्मिटन पल्सएआई के सर्वे में सामने आया है कि सोने की खरीद अब अधिक व्यक्तिगत और छोटी रकम/मात्रा में होने लगी है। 18-39 वर्ष के 5,000 उपभोक्ताओं पर आधारित इस अध्ययन के अनुसार पारंपरिक, परिवार-केंद्रित खरीदारी की जगह अब तर्क-आधारित और व्यक्तिगत फैसलों का महत्व बढ़ रहा है। जेन जी और मिलेनियल्स सोने की खरीद को अब शादी-समारोह से आगे बढ़कर व्यक्तिगत माइलस्टोन और पहली सैलरी जैसे शुरुआती निवेश के रूप में देख रहे हैं।

सुरक्षा के मामले में पहली पसंद

आधुनिक निवेश विकल्पों की बढ़ती पहुंच के बावजूद युवा भारतीयों के लिए सोना अब भी सबसे भरोसेमंद निवेश बना हुआ है। सर्वे के अनुसार यदि आज 25,000 रुपये निवेश करने हों तो 61.9% उत्तरदाता सोने को चुनेंगे। यह आंकड़ा म्यूचुअल फंड (16.6%), फिक्स्ड डिपॉजिट (13%), शेयर बाजार (6.6%) और क्रिप्टो (1.9%) से काफी आगे है। आर्थिक अनिश्चितता के समय भी सोने पर भरोसा कायम है। 65.7% लोगों ने कहा कि बैंक बचत, म्यूचुअल फंड या इक्विटी की तुलना में सोना उन्हें सबसे सुरक्षित विकल्प लगता है। यह ट्रेंड दर्शाता है कि जेन जी और मिलेनियल्स दोनों के लिए सोना अब भी वित्तीय सुरक्षा का प्रमुख सहारा बना हुआ है।

छोटी खरीदारी बन रही नया ट्रेंड

सर्वे से स्पष्ट संकेत मिलता है कि अब सोने की बड़ी और कम अंतराल वाली खरीदारी से हटकर छोटी और नियमित खरीदारी का रुझान तेजी से बढ़ रहा है। हाल की 61.9% खरीद 5 ग्राम से कम की रही, जिसमें 27.5% लोगों ने 2 ग्राम से कम और 34.4% ने 2 से 5 ग्राम के बीच सोना खरीदा। अब 42% परिवार समय-समय पर छोटी मात्रा में सोना खरीदना पसंद कर रहे हैं, जबकि 58% अभी भी एकमुश्त और अवसर आधारित खरीद करते हैं।

परिवार की भूमिका भी महत्वपूर्ण

निवेश के मामले में परिवार की भूमिका अभी भी महत्वपूर्ण है, लेकिन सोने की खरीद के फैसले अब तेजी से व्यक्तिगत होते जा रहे हैं। सर्वे के मुताबिक 66.7% उत्तरदाताओं ने कहा कि आज सोना खरीदना मुख्य रूप से व्यक्तिगत और स्वयं प्रेरित निर्णय बन चुका है, न कि केवल पारिवारिक प्रभाव से लिया गया फैसला। 42.3% लोगों ने बताया कि उनके घर में हाल की सोने की खरीद की पहल उन्होंने खुद की, जबकि 40% ने माता-पिता या बड़े परिवार के सदस्यों को इसका श्रेय दिया। यह बदलाव पीढ़ियों के बीच स्पष्ट अंतर को दिखाता है। जेन जी अब कब और कैसे सोना खरीदना है, इसका फैसला खुद लेने में अधिक आत्मविश्वास दिखा रहे हैं और इसे व्यक्तिगत वित्तीय निर्णय मानते हैं। वहीं, मिलेनियल्स अब भी गोल्ड को परिवार की योजना और दीर्घकालिक सुरक्षा के नजरिए से देखते हैं, जहां खरीदारी सामूहिक प्राथमिकताओं से प्रभावित रहती है।

अब शादियों तक सीमित नहीं

दिलचस्प बात यह है कि पहली बार सोना खरीदना अब केवल शादी जैसे अवसरों तक सीमित नहीं रहा। 24.3% लोगों ने अपनी पहली सैलरी या व्यक्तिगत आय के बाद पहली बार सोना खरीदा, जबकि 23.9% ने इसे निवेश के रूप में चुना। यह ट्रेंड पीढ़ियों के व्यवहार में अंतर भी दिखाता है। जेन जी छोटे और व्यक्तिगत माइलस्टोन से सोने की खरीद शुरू कर रहे हैं, जबकि मिलेनियल्स इसे जीवन की बड़ी घटनाओं और दीर्घकालिक सुरक्षा से जोड़कर देखते हैं।

सोने की खरीद में डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग बढ़ा है। इसके बावजूद सोने की खरीदारी में अभी भी पारंपरिक चैनल्स पर भरोसा अधिक है। सर्वे के अनुसार, 38.3% लोग सबसे अधिक सोना बड़ी ब्रांडेड ज्वेलरी चेन से खरीदते हैं, जबकि 34.7% उपभोक्ता स्थानीय ज्वैलर पर भरोसा करते हैं। इसके विपरीत, केवल 5.2% लोग ही ऑनलाइन प्लेटफॉर्म या ऐप के जरिए सोना खरीद रहे हैं। खरीद से जुड़ी चिंताओं में शुद्धता और प्रामाणिकता सबसे बड़ी चिंता के रूप में सामने आई, जिसे 49.4% उत्तरदाताओं ने प्रमुख कारण बताया।

खरीद के बाद पछतावा भी बड़ा संकेत

सर्वे की सबसे महत्वपूर्ण बात यह सामने आई कि सोना खरीदने के बाद बड़ी संख्या में युवा उपभोक्ता असमंजस या पछतावा महसूस करते हैं। करीब 67.1% उत्तरदाताओं ने माना कि उन्हें अक्सर या कभी-कभी सोना खरीदने के बाद पछतावा हुआ है। इसके पीछे सबसे बड़ी वजह खरीदी गई कीमत (38.9%) रही, जबकि 33.5% लोगों ने ज्वैलरी, सिक्के या डिजिटल गोल्ड जैसे फॉर्मेट को लेकर भ्रम को कारण बताया। वहीं 18.8% ने पर्याप्त जानकारी के अभाव को जिम्मेदार ठहराया। यह ट्रेंड दिखाता है कि सोने पर भरोसा मजबूत है, लेकिन खरीद प्रक्रिया को लेकर युवाओं का आत्मविश्वास अभी भी पूरी तरह विकसित नहीं हुआ है।

भविष्य में सोना खरीदने का इरादा

लोग भविष्य में भी खूब सोना खरीदना चाहते हैं। इस सर्वे में यह भी सामने आया कि भविष्य में सोना खरीदने का इरादा बहुत मजबूत है। 52.7% उत्तरदाता अगले 12 से 24 महीनों में सोना खरीदने के लिए "बहुत संभावना" दिखाते हैं। कुल मिलाकर सोने का स्थान युवा भारतीयों के बीच अब भी अडिग है, हालांकि खरीदारी के तरीके बदल रहे हैं। छोटे निवेश, व्यक्तिगत निर्णय और पारंपरिक खरीदारी चैनल्स में भरोसा दर्शाता है कि सोना का आकर्षण मजबूत है और आने वाले समय में भी यह सुरक्षित निवेश के रूप में रहेगा।

महंगाई के दौर में बच्चों के लिए बनाएं फंड

उच्च शिक्षा के लिए करें मजबूत प्लानिंग

तैयारी

बिजनेस डेस्क

- तेजी से महंगी हो रही पढ़ाई, अभी नहीं संभले तो पड़ेगा भारी
- एसआईपी समेत कई निवेश विकल्पों के बारे में सोचना होगा
- एक संतुलित, बहुआयामी और समयबद्ध रणनीति बनानी होगी

आज के दौर में शिक्षा केवल एक आवश्यकता नहीं, बल्कि भविष्य की सबसे बड़ी पूंजी बन चुकी है, लेकिन इसके साथ स्कूल और कॉलेज की फीस सामान्य महंगाई दर से कहीं ज्यादा तेजी से बढ़ रही है। इंटरनेशनल बोर्ड, प्रोफेशनल कोर्स, विदेश में पढ़ाई, हॉस्टल और रहने-खाने का खर्च ये सभी मिलकर उच्च शिक्षा को बेहद महंगा बना देते हैं। ऐसे में माता-पिता के लिए यह जरूरी हो गया है कि वे समय रहते अपने बच्चों की पढ़ाई के लिए व्यवस्थित और दीर्घकालिक वित्तीय योजना बनाएं। अक्सर देखा जाता है कि माता-पिता एक अनुमानित रकम तय कर लेते हैं और हर महीने एसआईपी शुरू कर देते हैं। यह एक अच्छा कदम है, लेकिन सवाल यह है कि क्या केवल एसआईपी पर निर्भर रहना पर्याप्त है? बदलते आर्थिक हालात और शिक्षा महंगाई को देखते हुए जवाब है नहीं। जरूरत है एक संतुलित, बहुआयामी और समयबद्ध रणनीति की।

जल्दी शुरुआत ही सबसे बड़ा फायदा

उच्च शिक्षा की योजना में समय सबसे महत्वपूर्ण कारक है। यदि बच्चा छोटा है और आप अभी से निवेश शुरू करते हैं, तो कंपाउंडिंग का लाभ कई गुना बढ़ जाता है। उदाहरण के तौर पर, यदि आप 10–15 साल तक नियमित एसआईपी करते हैं, तो छोटी-छोटी मासिक बचत भी बड़ा फंड बना सकती है। देर से शुरुआत करने पर आपको अधिक रकम निवेश करनी पड़ सकती है, जिससे घरेलू बजट पर दबाव बढ़ सकता है।

एक निवेश विकल्प पर निर्भर न रहें

अक्सर लोग पूरे शिक्षा फंड को इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश कर देते हैं और फीस भरने तक उसे वहीं रखते हैं। लेकिन यदि फीस के समय बाजार में गिरावट आ जाए, तो आपके फंड की वैल्यू घट सकती है। इसलिए जरूरी है कि जैसे-जैसे फीस का समय नजदीक आए, निवेश को सुरक्षित विकल्पों में शिफ्ट किया जाए। उदाहरण के लिए लक्ष्य से 3–4 साल पहले धीरे-धीरे डेट फंड या एफडी में ट्रांसफर करें। अंतिम 1–2 साल में जोखिम बहुत कम कर दें और पैसा लिक्विड या सुरक्षित साधनों में रखें। यह रणनीति आपको बाजार के उतार-चढ़ाव से बचाती है।

शिक्षा महंगाई का सही अनुमान लगाएं

भारत में शिक्षा महंगाई दर सामान्य महंगाई से अधिक, लगभग 8–12% तक मानी जाती है। यदि आज किसी कोर्स की फीस 10 लाख रुपये है, तो 10 साल बाद वही कोर्स 20–25 लाख रुपये तक हो सकता है। इसलिए भविष्य की लागत का अनुमान लगाते समय महंगाई को शामिल करना जरूरी है। केवल वर्तमान फीस देखकर योजना बनाना पर्याप्त नहीं है।

अन्य खर्चों को भी जोड़ें

अक्सर माता-पिता केवल ट्यूशन फीस को ध्यान में रखकर फंड बनाते हैं, जबकि वास्तविक खर्च इससे कहीं अधिक होता है। विशेषकर विदेश में पढ़ाई के मामले में रहने और खाने का खर्च, हेल्थ इंश्योरेंस, यात्रा खर्च, लैपटॉप और अन्य गैजेट्स, एप्लिकेशन फीस, इंटर्नशिप या प्रोजेक्ट खर्च इन सभी खर्चों को जोड़कर ही वास्तविक लक्ष्य तय करें। विदेश में पढ़ाई का खर्च तो डॉलर या अन्य विदेशी मुद्रा में होने के कारण और भी बढ़ सकता है।

एजुकेशन लोन से न घबराएं

कई माता-पिता एजुकेशन लोन को नकारात्मक नजर से देखते हैं, लेकिन यह सोच हमेशा सही नहीं होती। यदि समझदारी से लिया जाए, तो एजुकेशन लोन रिटायरमेंट सेविंग्स को बचाने में मदद कर सकता है। उदाहरण के लिए, यदि आपके पास शिक्षा और रिटायरमेंट दोनों के लिए सीमित फंड है, तो शिक्षा के लिए आंशिक लोन लेकर आप अपने रिटायरमेंट कॉर्पस को सुरक्षित रख सकते हैं। इसके अलावा, एजुकेशन लोन पर टैक्स लाभ भी मिलता है और पढ़ाई पूरी होने के बाद बच्चे खुद इसे चुकाने में योगदान दे सकते हैं।

रिटायरमेंट से समझौता न करें

बच्चों की पढ़ाई महत्वपूर्ण है, लेकिन अपनी रिटायरमेंट सुरक्षा को नजरअंदाज करना भविष्य में आर्थिक संकट पैदा कर सकता है। शिक्षा के लिए आप लोन ले सकते हैं, लेकिन रिटायरमेंट के लिए नहीं। इसलिए दोनों लक्ष्यों में संतुलन बनाना जरूरी है।

नियमित समीक्षा करें

हर साल अपनी योजना की समीक्षा करें। यदि आपकी आय बढ़ती है, तो **SIP** की राशि भी बढ़ाएं। अगर लक्ष्य की लागत बदलती है या बच्चे की रुचि अलग दिशा में जाती है, तो योजना में संशोधन करें।

अनुशासन ही सफलता की कुंजी

बढ़ती महंगाई के इस दौर में बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए पहले से तैयारी करना अनिवार्य हो गया है। केवल बचत नहीं, बल्कि स्मार्ट निवेश, जोखिम प्रबंधन और समय पर समीक्षा ही मजबूत शिक्षा फंड का आधार बनते हैं। जल्दी शुरुआत, विविध निवेश, महंगाई का सही अनुमान और जरूरत पड़ने पर एजुकेशन लोन ये सभी कदम मिलकर आपके बच्चे के सपनों को साकार कर सकते हैं।

प्राइवेट नौकरी वाले जान लें अहम टिप्स

आर्थिक रूप से रहेंगे मजबूत

- अपने वेतन का करीब 20 फीसदी शुरू से ही निवेश करें
- अपना बजट बनाएं, लक्ष्य तय करें और गैरजरूरी खर्चों से बचें
- सैलरी 10% बढ़ती है, तो कम से कम 5% अतिरिक्त निवेश करें
- व्यक्तिगत हेल्थ इंश्योरेंस जरूर लें, यह बीमारी में काम आएगा

सुझाव

बिजनेस डेस्क

प्राइवेट सेक्टर में नौकरी करने वाले लाखों युवाओं के लिए करियर की शुरुआत उत्साह और सपनों से भरी होती है। अच्छी सैलरी, कॉर्पोरेट लाइफस्टाइल और तेजी से बढ़ते अवसर आकर्षित करते हैं, लेकिन इस चमक-दमक के पीछे एक सच्चाई भी है प्राइवेट नौकरी में सरकारी कर्मचारियों जैसी पेंशन, स्थायी सुरक्षा या व्यापक सामाजिक लाभ अक्सर उपलब्ध नहीं होते। ऐसे में यदि वित्तीय योजना मजबूत न हो, तो भविष्य असुरक्षित हो सकता है। करियर की शुरुआत में की गई छोटी वित्तीय गलतियां समय के साथ बड़ी समस्या बन जाती हैं। इसलिए जरूरी है कि शुरुआत से ही सतर्क रहें और कुछ सामान्य लेकिन गंभीर वित्तीय भूलों से बचें।

अनियंत्रित जीवनशैली की शुरुआत

अक्सर युवा नौकरी लगते ही खर्च की आजादी का आनंद लेने लगते हैं। सैलरी आते ही किराया, घूमना-फिरना, गैजेट्स और ऑनलाइन शॉपिंग पर पैसा खर्च हो जाता है। लेकिन यदि आय और खर्च का स्पष्ट बजट न हो, तो बचत पीछे छूट जाती है। वित्तीय स्थिरता की पहली शर्त है बजट बनाना। 50-30-20 फॉर्मूला एक आसान तरीका है। इसमें 50% आय जरूरी खर्चों के लिए, 30% लाइफस्टाइल और शौक के लिए तथा 20% बचत और निवेश के लिए रखा जाता है। समस्या तब होती है जब लोग बचत वाले हिस्से को टाल देते हैं। कई बार दिखावे या सामाजिक दबाव में जरूरत से ज्यादा खर्च कर बैठते हैं। याद रखें, कमाई से ज्यादा जरूरी है पैसे का प्रबंधन।

वेतन बढ़ा, बचत नहीं

प्राइवेट सेक्टर में समय-समय पर इंक्रीमेंट और प्रमोशन मिलते हैं। लेकिन अक्सर देखा गया है कि वेतन बढ़ते ही खर्च भी उसी अनुपात में बढ़ जाता है। इसे लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन कहते हैं। नई कार, महंगा मोबाइल, ब्रांडेड कपड़े, बार-बार ट्रैवल ये सब बढ़ती आय के साथ जुड़ जाते हैं। नतीजा यह होता है कि बचत की दर स्थिर ही रहती है या घट जाती है। समझदारी यह है कि हर वेतन वृद्धि के साथ निवेश भी बढ़ाया जाए।

निवेश को टालना

अभी तो करियर की शुरुआत है, बाद में निवेश करेंगे यह सोच सबसे खतरनाक है। निवेश में समय सबसे बड़ा हथियार है। जितनी जल्दी शुरुआत करेंगे, उतना ही कंपाउंडिंग का फायदा मिलेगा। मान लीजिए कोई व्यक्ति 25 साल की उम्र से हर महीने 5,000 रुपये एसआईपी में निवेश करता है और दूसरा 35 साल की उम्र से 10,000 रुपये। लंबे समय में पहले व्यक्ति का फंड अधिक हो सकता है, क्योंकि उसे 10 साल का अतिरिक्त समय मिला। प्राइवेट नौकरी में पेंशन की गारंटी नहीं होती। इसलिए रिटायरमेंट फंड बनाना आपकी जिम्मेदारी है। म्यूचुअल फंड एसआईपी, पीपीएफ, एनपीएस या अन्य लंबी अवधि के साधनों में नियमित निवेश जरूरी है।

इमरजेंसी फंड की अनदेखी

प्राइवेट सेक्टर में नौकरी की स्थिरता सीमित हो सकती है। अचानक छंटनी, कंपनी बंद होना या व्यक्तिगत कारणों से नौकरी छोड़नी पड़ सकती है। ऐसे समय में यदि इमरजेंसी फंड न हो, तो आपको कर्ज लेना पड़ सकता है या निवेश तोड़ना पड़ सकता है। कम से कम 6 से 9 महीने के खर्च के बराबर राशि रखें।

बीमा को हल्के में लेना

कई लोग सोचते हैं कि कंपनी द्वारा दिया गया ग्रुप हेल्थ इंश्योरेंस पर्याप्त है। लेकिन नौकरी बदलते ही यह सुविधा खत्म हो सकती है। इसलिए व्यक्तिगत हेल्थ इंश्योरेंस लेना जरूरी है। इसके अलावा, यदि परिवार आप पर निर्भर है, तो टर्म लाइफ इंश्योरेंस अनिवार्य है। यह कम प्रीमियम में बड़ी सुरक्षा देता है।

कर्ज का गलत इस्तेमाल

क्रेडिट कार्ड का अत्यधिक उपयोग और पर्सनल लोन लेना भी बड़ी वित्तीय गलती है। 18% से 36% तक ब्याज दर आपकी बचत को खत्म कर सकती है। कर्ज लें तो केवल जरूरी जरूरतों के लिए, जैसे होम लोन।

अनुशासन ही असली सुरक्षा

प्राइवेट नौकरी में अवसर बहुत हैं, लेकिन जोखिम भी कम नहीं। यहां भविष्य की सुरक्षा आपके अपने हाथ में है। बजट बनाना, लाइफस्टाइल पर नियंत्रण, समय पर निवेश, पर्याप्त बीमा और इमरजेंसी फंड ये पांच स्तंभ आपकी आर्थिक मजबूती की नींव हैं। वहीं, आज का अनुशासन आपको आर्थिक स्वतंत्रता और मानसिक शांति दे सकता है।

शेयर बाजार की बदहाली से इक्विटी म्यूचुअल फंड में घटा निवेश

जानकारी

बिजनेस डेस्क

- गोल्ड ईटीएफ में निवेश 106% बढ़ा
- शेयर बाजार में इन दिनों खूब दिख रही उठापटक
- आम निवेशकों का सेंटिमेंट प्रभावित हुआ

शेयर बाजार में इन दिनों उठा-पटक का दौर चल रहा है। किसी दिन शेयर बाजार का सूचकांक कुलांचे भरते हुए ऊपर चढ़ जाता है तो किसी दिन जमीन पर लोटने लगता है। तभी तो इस साल के पहले महीने यानी जनवरी 2026 में इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश थोड़ा कम हुआ। स्थिति यह रही कि इस महीने गोल्ड ईटीएफ में इक्विटी म्यूचुअल फंड के मुकाबले ज्यादा निवेश हुआ। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स ऑफ इंडिया (एएमएफआई) के आंकड़ों के मुताबिक जनवरी महीने के दौरान इक्विटी म्यूचुल फंड्स में 24,028 करोड़ रुपये आए। इससे एक महीने पहले यानी दिसंबर 2025 के दौरान 28,054 करोड़ रुपये आए थे। मतलब कि इस महीने निवेश में 14% की कमी आई है। यदि साल दर साल के आधार पर देखें तो जनवरी 2025 की तुलना में इस साल जनवरी में यह गिरावट 39% रही है। पिछले साल जनवरी के दौरान इस फंड में 39,687 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था।

इक्विटी फंड्स में कौन पहली पसंद

जनवरी के दौरान अलग-अलग तरह के इक्विटी फंडों में, फ्लेक्सीकैप फंड निवेशकों की पहली पसंद बने रहे। इनमें सबसे ज्यादा 7,672 करोड़ रुपये का निवेश आया। इसके बाद मिडकैप फंड में 3,185 करोड़ रुपये और लार्ज एंड मिड-कैप फंड में 3,181 करोड़ रुपये का निवेश आया। स्मॉलकैप फंड में 2,942 करोड़ रुपये आए, लेकिन ईएलएसएस फंड से निवेशकों ने 593 करोड़ रुपये निकाल लिए। अगर पिछले महीने से तुलना करें, तो फोकस्ड फंड में निवेश 47% बढ़ा। दिसंबर 2025 में इनमें 1,056 करोड़ रुपये आए थे, जो जनवरी 2026 में बढ़कर 1,556 करोड़ रुपये हो गए। लार्जकैप फंड और सेक्टोरल/थीमैटिक फंड में भी पिछले महीने की तुलना में क्रमशः 28% और 10% ज्यादा निवेश आया। वहीं, मिड-कैप और स्मॉल-कैप फंड में निवेश पिछले महीने के मुकाबले 24% और 23% घट गया।

डेट फंड का चला जादू

जनवरी 2026 के दौरान डेट फंड में 74,827 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह अच्छी खबर है क्योंकि पिछले दो महीनों (नवंबर और दिसंबर 2025) में डेट फंड से कुल 1.58 लाख करोड़ रुपये बाहर चले गए थे। पिछले साल जनवरी की तुलना में इस साल डेट फंड में निवेश 42% कम रहा, जब 1.28 लाख करोड़ रुपये आए थे। डेट फंड की 16 अलग-अलग श्रेणियों में से, ओवरनाइट फंड में सबसे ज्यादा 46,280 करोड़ रुपये का निवेश आया। वहीं, कॉर्पोरेट बॉन्ड फंड से 11,472 करोड़ रुपये निकाल लिए गए। लिक्विड फंड में 30,681 करोड़ रुपये और मनी मार्केट फंड में 12,763 करोड़ रुपये का निवेश आया।

हाइब्रिड फंड में भी रौनक

बीते जनवरी महीने के दौरान हाइब्रिड फंड में 17,356 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह दिसंबर 2025 के 10,755 करोड़ रुपये की तुलना में 61% ज्यादा है। पिछले साल जनवरी 2025 की तुलना में यह आंकड़ा 98% बढ़ा है, जब 8,767 करोड़ रुपये का निवेश आया था। हाइब्रिड फंड की छह श्रेणियों में से, मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड में सबसे ज्यादा 10,485 करोड़ रुपये का निवेश आया। इसके बाद आर्बिट्राज फंड में 3,293 करोड़ रुपये आए। आर्बिट्राज फंड में तो पिछले महीने के मुकाबले निवेश में 2,507% की भारी बढ़ोतरी हुई, जो दिसंबर 2025 में सिर्फ 126 करोड़ रुपये था। हालांकि, इक्विटी सेविंग्स फंड और कंजरवेटिव हाइब्रिड फंड में पिछले महीने के मुकाबले क्रमशः 81% और 35% की गिरावट आई।

ईटीएफ में खूब हुआ निवेश

अन्य स्कीमों, जिनमें ईटीएफ और इंडेक्स फंड जैसे पैसिव फंड शामिल हैं, में जनवरी में 39,954 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह दिसंबर 2025 के 26,723 करोड़ रुपये से 50% ज्यादा है। गोल्ड ईटीएफ में तो सबसे ज्यादा 24,039 करोड़ रुपये का निवेश आया, जो पिछले महीने के मुकाबले 106% ज्यादा है। हो सकता है कि सोने की कीमतों में तेज बढ़ोतरी की वजह से निवेशक इस ओर आकर्षित हुए। अन्य ईटीएफ में 15,005 करोड़ रुपये का निवेश आया। विदेशों में निवेश करने वाले फंड-ऑफ-फंड में भी भारी उछाल देखा गया।

चालीस की उम्र में कर रहे हैं रिटायरमेंट प्लानिंग तो अपना लें ये अहम टिप्स

इस उम्र में भविष्य की आर्थिक सुरक्षा की असली तैयारी शुरू होती हैं, अच्छी रणनीति बनाकर निवेश करेंगे तो नहीं होगी परेशानी, भविष्य सुरक्षित रहेगा।

शुरुआत

बिजनेस डेस्क

रिटायरमेंट प्लानिंग अक्सर लोग 50 की उम्र के बाद शुरू करने की सोचते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि 40 की उम्र वह मोड़ है, जहां से भविष्य की आर्थिक सुरक्षा की असली तैयारी शुरू होती है। यह उम्र आमतौर पर करियर का सबसे स्थिर और आय का सबसे मजबूत दौर होता है। आमदनी अपने शिखर की ओर बढ़ रही होती है, लेकिन साथ ही जिम्मेदारियां भी बढ़ जाती हैं। बच्चों की पढ़ाई, होम लोन की ईएमआई, माता-पिता की देखभाल और जीवनशैली से जुड़े खर्च। ऐसे में यदि आपने अब तक रिटायरमेंट के बारे में गंभीरता से नहीं सोचा है, तो अब वक्त है इसे प्राथमिकता देने का। 40 की उम्र में रिटायरमेंट प्लानिंग का मतलब है सीमित समय में अधिक प्रभावी रणनीति अपनाना। आपके पास अब 20–25 साल का कार्यकाल बचा हो सकता है। इस दौरान सही निवेश, अनुशासन और जोखिम प्रबंधन से आप एक मजबूत रिटायरमेंट कॉर्पस तैयार कर सकते हैं। सबसे पहले अपनी आय, खर्च, ईएमआई, मौजूदा निवेश और बीमा की स्थिति को स्पष्ट रूप से समझें। हर महीने कितना पैसा बचता है और कितना खर्च होता है, इसका विस्तृत विश्लेषण करें। इसके साथ ही महंगाई दर, भविष्य के मेडिकल खर्च और रिटायरमेंट के बाद की जीवनशैली को ध्यान में रखते हुए यह अनुमान लगाएं कि आपको कितनी रकम की जरूरत होगी। विशेषज्ञ मानते हैं कि रिटायरमेंट के बाद भी वर्तमान खर्च का कम से कम 70–80% हर महीने चाहिए होगा।

सबसे पहले आय, खर्च, ईएमआई व निवेश की स्थिति समझें

रिटायरमेंट को प्राथमिकता बनाएं

अक्सर लोग बच्चों की पढ़ाई या घर खरीदने को प्राथमिकता देते हैं और रिटायरमेंट को टालते रहते हैं। लेकिन याद रखें, बच्चों को शिक्षा के लिए लोन मिल सकता है, रिटायरमेंट के लिए नहीं। ईपीएफ, पीपीएफ, एनपीएस और म्यूचुअल फंड एसआईपी जैसे साधनों में नियमित निवेश बढ़ाएं। कोशिश करें कि अपनी आय का कम से कम 15–25% हिस्सा रिटायरमेंट के लिए सुरक्षित रखें। यदि संभव हो तो हर साल आय बढ़ने के साथ निवेश राशि भी बढ़ाएं।

महंगे कर्ज से जल्दी छुटकारा पाएं

क्रेडिट कार्ड और पर्सनल लोन पर 12% से 24% तक ब्याज देना आपकी संपत्ति निर्माण की क्षमता को कमजोर करता है। ऐसे कर्ज को प्राथमिकता से खत्म करें। होम लोन अपेक्षाकृत सस्ता होता है, लेकिन यदि अतिरिक्त राशि उपलब्ध हो तो प्री-पेमेंट जरूर करें। कर्ज मुक्त जीवन रिटायरमेंट की दिशा में बड़ा कदम है।

इमरजेंसी फंड बनाना न भूलें

रिटायरमेंट निवेश के साथ-साथ एक मजबूत इमरजेंसी फंड होना भी जरूरी है। कम से कम 6 से 9 महीने के खर्च के बराबर राशि सेविंग अकाउंट या लिक्विड फंड में रखें। यह फंड अचानक नौकरी छूटने, बीमारी या किसी अप्रत्याशित खर्च के समय सुरक्षा कवच का काम करेगा। इससे आपको निवेश तोड़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

टैक्स प्लानिंग से बढ़ाएं बचत

सही टैक्स प्लानिंग से आप अपनी निवेश क्षमता बढ़ा सकते हैं। आयकर की धारा 80सी, एनपीएस में अतिरिक्त निवेश (80सीसीडी(1बी), हेल्थ इंश्योरेंस (80डी) और कैपिटल गेन प्लानिंग का लाभ उठाएं। टैक्स बचत केवल बचत नहीं है, बल्कि आपके भविष्य के लिए अतिरिक्त निवेश का अवसर है।

पर्याप्त बीमा सुरक्षा सुनिश्चित करें

40 की उम्र में परिवार आप पर निर्भर होता है। इसलिए पर्याप्त टर्म लाइफ इंश्योरेंस जरूर लें, जो कम से कम आपकी वार्षिक आय का 10–15 गुना हो। साथ ही, एक अच्छा हेल्थ इंश्योरेंस प्लान भी रखें, क्योंकि उम्र बढ़ने के साथ मेडिकल खर्च तेजी से बढ़ते हैं। समय-समय पर अपनी पॉलिसी की समीक्षा करना भी जरूरी है। बच्चों की शिक्षा एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है, लेकिन इसे रिटायरमेंट की कीमत पर पूरा करना समझदारी नहीं है। शिक्षा के लिए अलग निवेश योजना बनाएं, जैसे कि इक्विटी म्यूचुअल फंड या चाइल्ड प्लान। ध्यान रखें कि लंबी उम्र एक बड़ा वित्तीय जोखिम है। यदि रिटायरमेंट फंड पर्याप्त नहीं होगा, तो बाद में आर्थिक निर्भरता की स्थिति बन सकती है।

नियमित समीक्षा सफलता की कुंजी

रिटायरमेंट प्लानिंग एक बार का निर्णय नहीं, बल्कि निरंतर प्रक्रिया है। हर साल अपने निवेश, खर्च और लक्ष्यों की समीक्षा करें। यदि आपकी आय बढ़ती है या जिम्मेदारियां कम होती हैं, तो निवेश की गति बढ़ाएं। पोर्टफोलियो में इक्विटी और डेट का संतुलन उम्र के अनुसार रखें। जैसे-जैसे रिटायरमेंट नजदीक आए, जोखिम कम करते जाएं।

स्पष्ट रणनीति अपनाएं

40 की उम्र में रिटायरमेंट प्लानिंग शुरू करना देर नहीं है, बशर्ते आप अनुशासित और स्पष्ट रणनीति अपनाएं। सही दिशा में उठाया गया कदम आपको आर्थिक स्वतंत्रता और सम्मानजनक जीवन दे सकता है। याद रखें, रिटायरमेंट कोई अंत नहीं, बल्कि जीवन का नया अध्याय है और इसकी तैयारी आज से ही शुरू होती है।

खबर संक्षेप

रेडियो समय का साक्षी और समाज की सामूहिक स्मृति

चरखी दादरी। रेडियो केवल सूचना या मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि समय का साक्षी और समाज की सामूहिक स्मृति है। इंटरनेट युग में आज भी यह माध्यम अकेलेपन का साथी बनता है। आपदा में मार्गदर्शक और लोकतंत्र में जन की आवाज है। डिजिटल युग में भी रेडियो अपनी विश्वसनीयता और पहुंच के कारण जनसंचार का सशक्त माध्यम बना हुआ है। विश्व रेडियो दिवस के अवसर पर जिले के पहले एफएम रेडियो अपना रेडियों एफएम 91.2 कार्यालय में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अध्यक्षता संचालक कृष्ण खरब व प्रीतम ने की। बतौर मुख्य अतिथि पूर्व आबकारी अधिकारी चुन्नीलाल बंसल ने सहभागिता की। श्रोताओं ने विभिन्न कार्यक्रमों का आनंद उठाया।

भाजपाइयों ने पुलवामा के शहीदों को दी श्रद्धांजलि

भिवानी। जम्मू कश्मीर के पुलवामा में 14 फरवरी 2019 को सीआरपीएफ के काफिले पर हुए आतंकवादी हमले की बरसी पर हमले में शहीद वीर जवानों को भाजपाईयों ने भावभीनी श्रद्धांजलि दी। श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए भाजपा नेता रीतिक वधवा ने कहा कि पुलवामा के कायरतापूर्ण आतंकी हमले में शहीद हुए सभी अमर वीर जवानों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि एवं कोटि कोटि नमन हैं। मां भारती के वीर सपूतों का सर्वोच्च बलिदान राष्ट्र की एकता, सुरक्षा और संकल्प का अमिट प्रतीक है।

वूमैन हैल्पिंग सोसायटी ने शहीदों किया नमन

भिवानी। इंडियन वेटरन्स ऑर्गेनाइजेशन व वूमैन हैल्पिंग सोसायटी ने श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया। कार्यक्रम के दौरान संस्था के पदाधिकारियों और सदस्यों ने शहीद स्मारक पर एकत्रित होकर पुलवामा के वीर जवानों सहित देश के सभी अमर शहीदों को पुष्प अर्पित किए। इस दौरान शहीद स्मारक व आसपास का माहौल भारत माता की जय और शहीद जवान अमर रहे के नारों से गूंज उठा।

वाहन चोरी मामलों में दो आरोपित पकड़े

भिवानी। डिटेक्टिव स्टाफ लोहारू की टीम ने वाहन चोरी के मामलों में संलिप्त दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। एक आरोपी को तोशाम क्षेत्र से गिरफ्तार किया गया था। आरोपी की पहचान संदीप पुत्र संजय निवासी जाटू लोहारी जिला भिवानी के रूप में हुई। पुलिस टीम द्वारा आरोपी के कब्जे से चोरी की मोटरसाइकिल बरामद की।

जूनियर ने सीनियर विद्यार्थियों को दी विदाई

बवानीखेड़ा। आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस में ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने बारहवीं के विद्यार्थियों के लिए भावपूर्ण विदाई समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम में विद्यालय के चेयरपर्सन मास्टर राजेंद्र यादव एवं चेयरमैन आनंद यादव ने 12वीं के विद्यार्थियों को आशीर्वाद देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। चेयरमैन आनंद यादव ने कहा कि जीवन में सदैव एक-दूसरे की सहायता करें और सबसे पहले अच्छा इंसान बनने का प्रयास करें।

लोहारू अनाजमंडी के हिंदू सम्मेलन में महिलाओं ने निकाली कलशयात्रा

भारतीय सांस्कृतिक विरासत बहुत ही समृद्ध : विकास गिरी

मुख्य चौराहों पर कलश यात्राओं का फूल बरसाकर स्वागत किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ लोहारू

विभिन्न सामाजिक संगठनों के सहयोग से शनिवार को स्थानीय अनाज मंडी परिसर में हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया गया। साधु संतों के मार्गदर्शन में आयोजित कार्यक्रम में कस्बे की चार दिशाओं से चार कलश यात्रा कार्यक्रम स्थल पर पहुंची। शहर के मुख्य चौराहों पर कलश यात्राओं का फूल बरसाकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए। अलख आश्रम बहल से विकास गिरी ने पंच परिवर्तन को केंद्र में रखते हुए कहा कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत बहुत समृद्ध है। हमारे पूर्वजों के रहन सहन और दैनिक क्रियाओं में ही आस्था, विश्वास, स्नेह, समर्पण, सहयोग शमिल हैं। कुटुम्ब प्रबोधन, नागरिक कर्तव्य, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समरसता, स्व का बोध इन सब को अपने जीवन में उतारना होगा। बल्लभगढ़ के राष्ट्रवादी कवि पुनीत पांचाल ने अपनी काव्य प्रस्तुति दी। संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता जितेन्द्र कुमार ने देश, धर्म और समाज के प्रति समर्पण भाव के साथ सेवा का आह्वान किया। मलवाना धाम के सोमबीर भगत के द्वारा भंडारा आयोजित किया गया। गिगनाऊ आश्रम से दयानंद भारती, बहल अलख आश्रम से भोला गिरी , बलबीर गिरी ने आशीर्वाद दिया। सनातन हिन्दू जागृति संगठन से अक्षय शास्त्री ने उपस्थित जनसमूह को हिन्दू होने के नाते आपस में मतभेदों को भुला कर एकजुट रहने का मंत्र दिया। सम्मेलन के आयोजन में श्री श्याम सुंदर ज्योति मण्डल, श्री श्याम सेवा समिति, शहीद भगत सिंह कल्याण समिति, राव नरहर दास शक्ति माता सेवा समिति, अग्रवाल सभा, विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल, प्रयास एक कोशिश सामाजिक संगठन, एसएस जे फाउंडेशन, सैनी सभा धोलिया कुआ, संत रविदास जन जागरूक संस्था ने अपनी भूमिका निभाई।

लोहारू। कलश यात्रा के साथ हिंदू सम्मेलन में हिस्सा लेते हुए लोग।

इन्होंने किया योगदान

सम्मेलन में नगर पालिका अध्यक्ष प्रदीप तायल, उपप्रधान प्रतिनिधि विपिन सैनी, जितेंद्र जिंदल, रोहताश चौहान, पार्षद अजय शर्मा, पार्षद रवि केडिया, पार्षद प्रतिनिधि नरेश बड़सीवाल, विजय शेखावत, कमलेश भोडुका, वासु मतानी, जगदीश जायलवाल, डॉक्टर अनिल जोशी, संजय खंडेलवाल, मास्टर पवन स्वामी, राजू शेखावत, पवन पीजी, महेंद्र शर्मा, राधेश्याम स्वामी, बाबूलाल बड़सीवाल, जगदीश जायलवाल ने अपना योगदान दिया।

भिवानी। बेटी आरोही के जन्मदिन पर पौधरोपण करती आरोही, महंत चरणदास व अन्य।

पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया

बेटी के जन्मदिन पर पौधे लगाने का संकल्प लिया

- बेटियों के नाम वर्ष 2026 में हो अधिक से अधिक पौधरोपण : चरणदास
- भारत में हर साल 12 लाख लोग जहरीली हवा के कारण मर रहे : भारद्वाज

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

बेटियों के नाम इस बार 2026 में हों अधिक से अधिक पौधरोपण का संदेश देते हुए सामाजिक संस्था नेताजी सुभाषचंद्र बोस युवा जागृत सेवा समिति के अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय युवा पुरस्कार विजेता अशोक कुमार भारद्वाज ने अपनी 10 वर्षीय पुत्री आरोही का जन्मदिन सात दिवसीय बेटी उत्सव व पर्यावरण संरक्षण अभियान 2026 के रूप में मनाया। कार्यक्रम की शुरुआत हनुमान जोहड़ी मंदिर से की, जहां भारतीय संस्कृति के अनुरूप उत्सव का शुभारंभ हुआ। जन्मदिन पर आरोही ने केक काटने की बजाय जुलाई माह में 10 पौधे लगाने का संकल्प लिया।

इस मौके पर माता अंजु भारद्वाज, पिता अशोक भारद्वाज, बड़ी बहन नव्या एवं सहेलियों ने उसे पौधे भेंट कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। उपस्थित जनों से भी अपील की गई कि वे बेटियों के नाम अधिक से अधिक पौधारोपण करें और पर्यावरण बचाने में अपनी भागीदारी निभाएं। महंत चरणदास महाराज ने कहा कि बेटियों को आगे बढ़ाने और सुरक्षित वातावरण देने की आवश्यकता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि बेटियों को शिक्षित करना समाज की प्राथमिक जिम्मेदारी है। वहीं विवेकानंद हाई स्कूल भिवानी की संचालिका सावित्री यादव और एनएसएस अधिकारी डॉ. कामना

पूर्वमंत्री ने किया कई गांवों का दौरा

- दोबारा कलम हाथ में आई तो लोहारू हलके का होगा कायाकल्प : पूर्व मंत्री जेपी दलाल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ लोहारू

पूर्व मंत्री जेपी दलाल ने कहा कि दोबारा कलम हाथ में आई तो लोहारू हलके की कायाकल्प कर दूंगा। लोहारू हलके के युवाओं के लिए रोजगार की व्यवस्था करना और लोहारू क्षेत्र के किसान के खेत में खजूर लगाना प्राथमिकता रहेगी। पूर्व मंत्री जेपी दलाल शनिवार को लोहारू हलके गांवों का दौरा करते हुए ग्रामीणों से बातचीत कर रहे थे। पूर्व मंत्री ने हलके के खरकड़ी, बुढेड़ी, चहडक़लां सहित अनेक गांवों का दौरा किया और कई विवाह समारोह में शिरकत कर नव विवाहितों को आशीर्वाद दिया।

लोहारू। हलके के गांवों का दौरा करते हुए पूर्व मंत्री जेपी दलाल व अन्य।

गौ-सेवा ही सबसे बड़ी सेवा

पूर्व मंत्री जेपी दलाल ने कहा कि गौ-सेवा ही सबसे बड़ी सेवा है और समाज के सहयोग से ही हमारी संस्कृति सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि गौ, गंगा, गीता और गायत्री भारतीय संस्कृति की पहचान है। उन्होंने कहा कि गाय खेतों को खाद, हमें दूध देती हैं, जो कि अमृत के समान है। उन्होंने कहा कि गौवंश की रक्षा करना हमारा परम धर्म है। पूर्व मंत्री ने कहा कि केंद्र और प्रदेश में भाजपा सरकार के नेतृत्व में हर वर्ग का कल्याण के द्वार खोले हैं तथा हर वर्ग के हित को ध्यान में रखते हुए कारगर योजनाएं लागू की गई हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार के शासनकाल में हरियाणा प्रदेश विकास के पथ पर अग्रसर है। इस मौके पर अनेक भाजपा कार्यकर्ता उनके साथ थे।

योग को जीवन का हिस्सा बनाने का आह्वान

- कारी आदू के सरकारी स्कूल में चल रहे सात दिवसीय एनएसएस शिविर का हुआ समापन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ चरखी दादरी

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कारी आदू में आयोजित सात दिवसीय एनएसएस शिविर का समापन समारोह बड़े ही उत्साह एवं गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य वक्ता विकास राणा , प्राचार्य जयबीर सिंह कालीरमणा, गोपीराम व अन्य अध्यापकों ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। विद्यार्थियों ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत कर सभी उपस्थित अतिथियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर प्राचार्य जयबीर सिंह कालीरमणा ने रिसोर्स पर्सन को पुस्तक भेंट कर सम्मानित किया और उनके मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने भाषण, स्पीच और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। शिविर में उत्कृष्ट योगदान देने पर पवन श्योराण, सुमन देवी और कीर्ति को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। अपने संबोधन में मुख्य वक्ता विकास राणा ने विद्यार्थियों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करते हुए नियमित योग, संतुलित आहार और समय-समय पर स्वास्थ्य जांच कराने पर बल दिया। उन्होंने विद्यार्थियों से अपने जन्मदिवस जैसे विशेष अवसरों पर पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लेने का आह्वान किया।

चरखी दादरी। शिविर समापन अवसर पर बच्चों को सम्मानित करते स्टाफ सदस्य।

तैयारी में जुटें

प्राचार्य जयबीर सिंह कालीरमणा ने ग्यारहवीं व बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि शिविर से प्राप्त अनुशासन, सेवा-भाव और आत्मविश्वास को जीवन में उतारें तथा आगामी परीक्षाओं की तैयारी में पूर्ण समर्पण से जुट जाएं। उन्होंने कहा कि बिना संघर्ष के सफलता संभव नहीं है और निरंतर परिश्रम ही लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग है। एनएसएस पीओ विनोज राणा ने सातों दिनों में आयोजित गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए एनएसएस के महत्व को विस्तार से समझाया। उन्होंने विद्यार्थियों को नियमित अभ्यास, दृढ़ संकल्प और सकारात्मक सोच के साथ परीक्षा की तैयारी करने की प्रेरणा दी तथा सभी को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

समरसता समाज की मुख्य शक्ति: सच्चिदानंद

- सैकड़ों बाइक और देशभक्ति के नारों से बना उत्सव का माहौल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बाढ़ड़ा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद के तत्वावधान में सकल हिंदू समाज ने भव्य भगवा यात्रा और हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया। कार्यक्रम ने ना केवल धार्मिक उत्साह को दर्शाया, बल्कि सामाजिक समरसता और राष्ट्रवाद का भी कड़ा संदेश दिया। भगवा यात्रा का शुभारंभ गांव खोरड़ा से हुआ। सैंकड़ों मोटरसाइकिलों के काफिले के साथ यह यात्रा गोविंदपुरा और आर्य नगर होते हुए आगे बढ़ी। स्वयंसेवक बलवान सिंह आर्य और रविंद्र कोच के नेतृत्व में यात्रा गांव के राधा-कृष्ण मंदिर पहुंची। पूरी यात्रा के दौरान युवाओं का जोश देखते ही बन रहा था। देशभक्ति के गीतों और भारत माता की जय के नारों से पूरा वातावरण गूंज उठा। यात्रा के समापन पर हिंदू सम्मेलन आयोजित किया, जिसकी अध्यक्षता सरपंच कृष्ण सोनी ने की और मंच संचालन मास्टर अत्तर सिंह शर्मा ने किया। सम्मेलन में धर्मपाल आर्य और शास्त्री ने हिंदू समाज की एकता और वर्तमान परिस्थितियों पर अपने विचार रखे। ब्रह्मकुमारी बहन निर्मला ने ब्रह्मचर्य और स्वदेशी अपनाने पर विशेष जोर दिया। आचार्य जीयावंती ने हिंदुओं के सामने आने वाली चुनौतियों और उनके निवारण के महत्व को विस्तार से समझाया। स्वामी सच्चिदानंद सरस्वती ने सामाजिक समरसता को समाज की मुख्य शक्ति बताया। राजकुमार ने संघ की 100 वर्षों की यात्रा का विस्तृत वर्णन किया।

बाढ़ड़ा। भगवा यात्रा में शामिल बाइक सवार युवा। *फोटो : हरिभूमि*

ये रहे मौजूद

इस मौके पर रामफल सरपंच खोरड़ा, हनुमान खोरड़ा, ईश्वर सिंह दूहन, धर्मपाल शर्मा, बिजेंद्र सरपंच गोविंदपुरा, मेनेश बेनीवाल, पूर्व सरपंच गुगनराम, संघ अधिकारी संदीप, संदीप सरपंच, पूर्व सरपंच संत कुमार, वेद कौर, पूर्व सरपंच डा. राकेश कुमार, पूर्व बीडीसी जोगिंद्र आर्य, अजय शास्त्री, पूर्व सरपंच होशियार सिंह, परमानंद शर्मा, ओमप्रकाश लाड, धर्मबीर लाड, सत्यनारायण शर्मा, राजेश, राजपाल आर्य और परमानंद शर्मा आदि मौजूद रहे।

मिल-जुलकर कार्य करें: संजय

- बीएलजेएस कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना का शिविर शुरू

हरिभूमि न्यूज ▶▶ तोशाम

तोशाम के बनवारीलाल जिंदल सूईवाला महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना ने साप्ताहिक विशेष शिविर का शुभारंभ किया। शिविर के शुभारंभ पर प्राचार्य श्याम वशिष्ठ मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। शिविर में सर्वप्रथम सभी स्वयंसेवकों का पंजीकरण किया। सभी स्वयंसेवकों ने मां सरस्वती की वंदना तथा एनएसएस गीत गायन किया। कार्यक्रम अधिकारी संजय गुप्ता ने स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए बताया की राष्ट्रीय सेवा योजना का उद्देश्य बच्चों को शैक्षिक ज्ञान के अलावा सामाजिक ज्ञान उपलब्ध करवाना है।

तोशाम। एनएसएस शिविर को संबोधित करते वक्ता। *फोटो : हरिभूमि*

यातायात के नियमों का पालन करें

एनएसएस बच्चों को समाज में मिल-जुलकर रहने के प्रति प्रेरित करती है। उन्होंने स्वयंसेवकों को समझाया कि मिल-जुलकर कार्य करें स्वच्छता के प्रति ध्यान दें समाज में फैली विभिन्न बुराइयों को दूर करने के लिए लोगों को प्रेरित करें। उन्होंने स्वयंसेवकों को बताया की आज का हमारा विशेष अभियान नशा मुक्ति और सड़क सुरक्षा के प्रति सजग रहेगा हमें सभी को नशे से मुक्त रहना चाहिए और सड़क पर कोई भी साधन चलाते समय यातायात के नियमों की पालना करनी चाहिए। प्राचार्य श्याम वशिष्ठ ने बताया कि स्वयं अनुशासित रहते हुए जीवन यापन करें। जीवन में कभी नशा नहीं करें तथा अन्य लोगों को भी नशा न करने के लिए प्रेरित करें, क्योंकि नशा जीवन के लिए अभिशाप है।

101 युवाओं ने किया रक्तदान

- विज्ञान प्रयोगशाला में भी रक्त का विकल्प नहीं, इसलिए रक्तदान जरूरी : डुडेजा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बवानीखेड़ा

कुंगड़ पीड़ित गोशाला उपचार केंद्र में सहारा चेरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया। शहीद भगत सिंह युवा क्लब द्वारा आयोजित कार्यक्रम पुलवामा के वीर शहीदों की स्मृति को समर्पित किया। रक्तदान शिविर डॉ. हिमांशी तंवर एम्स बाढ़सा की अगुवाई में लगाया, जिसमें कैंसर रोगियों के लिए रक्त एकत्रित किया। शिविर के आयोजक सुरेंद्र कुंगड़ व डा. कुलवंत कुंगड़ रहे। मुख्यातिथि शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा थे।

बवानीखेड़ा। कुंगड़ में गोशाला उपचार केंद्र में रक्तदाताओं को सम्मानित करते अतिथि।

रक्त का विकल्प नहीं: राजेश डुडेजा

शिविर का आयोजन शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा की देखरेख में हुआ। इस दौरान 101 युवाओं ने रक्तदान किया, जिन्हें अतिथियों द्वारा बैज लगाकर व स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। शतकवीर डुडेजा ने कहा कि रक्तदान को महादान कहा जाता है, क्योंकि विज्ञान आज भी प्रयोगशाला में रक्त का विकल्प तैयार नहीं कर पाया है। उन्होंने कहा कि एक यूनिट रक्त तीन लोगों की जान बचा सकता है। विशेष रूप से कैंसर जैसे गंभीर रोगों से जूझ रहे मरीजों के लिए समय पर रक्त और प्लेटलेट्स की उपलब्धता जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर साबित होती है। आयोजक सुरेंद्र कुंगड़ व डा. कुलवंत कुंगड़ ने कहा कि शिविर के माध्यम से युवा न केवल शहीदों को नमन कर रहे हैं, बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी भी निभा रहे हैं।

"शिव संदेश सद्भावना यात्रा एवं आकर्षक झांकी" का भव्य आयोजन

90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महाशिवरात्रि पर्व मनाया

शिव के ज्योति स्वरूप, नशामुक्ति, नैतिक मूल्यों एवं विश्व शांति का दिया संदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶ चरखी दादरी

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की झोझूकलां शाखा के तत्वावधान में 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महाशिवरात्रि पर्व पर "शिव संदेश सद्भावना यात्रा एवं आकर्षक झांकी" का भव्य आयोजन किया। शोभायात्रा का शुभारंभ रामबास गांव स्थित ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र से विधिवत रूप से किया। कार्यक्रम का शुभारंभ राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी वसुधा दीदी, ज्योति बहन, नीलम बहन, सरपंच प्रतिनिधि अशोक शर्मा, मंदीप, जयप्रकाश, रामअवतार, सतीश जांगड़ा, मनफूल फोरमैन में आदि ने शिव ध्वज दिखाकर किया।

चरखी दादरी। शिव की पूजा अर्चना करते बीके भाई बहन व ग्रामीण।

आत्मचिंतन और आत्म परिवर्तन का पर्व

झांकी में परमपिता शिव के ज्योति स्वरूप, सहज राजयोग साधना, नशामुक्ति, नैतिक मूल्यों और विश्व शांति का संदेश दिया गया। महाशिवरात्रि पर्व पर राजयोगिनी वसुधा दीदी ने कहा कि महाशिवरात्रि आत्मचिंतन और आत्म परिवर्तन का पर्व है। जैसे शिव को प्रतीक रूप में आक-धतूरा अर्पित किया जाता है, वैसे ही हमें अपने जीवन की बुराइयों, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को भी परमात्मा को समर्पित कर देना चाहिए। झोझूकलां सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी ज्योति ने कहा कि सद्भावना यात्रा का उद्देश्य समाज में शांति, प्रेम, भाईचारा और आध्यात्मिक जागरूकता का प्रसार करना है। रामबास सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी नीलम बहन ने कहा कि सच्ची शिवरात्रि वहीं है, जब हम अपने भीतर के अंधकार को मिटाकर ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करें। सरपंच प्रतिनिधि अशोक शर्मा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्था समाज में आध्यात्मिक और मानवीय मूल्यों के लिए कार्य कर रही है।

खबर संक्षेप

दादी मसानी धाम में मूर्तियां की स्थापित

बाढ़ड़ा। द्वारका के दादी मसानी धाम पर अनेक देवी देवताओं की मूर्तियां स्थापित की गई। कार्यक्रम में गांव की हजारों महिला श्रद्धालुओं ने कलश यात्रा निकाल कर पूजा अर्चना में भाग लिया। मंदिर कमेटी अध्यक्ष व समाजसेवी कप्तान भीमसिंह ने बताया कि दादी मसानी धाम द्वारका पर मूर्ति स्थापना कार्यक्रम में भगवान शिव, पार्वती, राधा, कृष्णा, दुर्गा माता, चौगानी माता, शनिदेव महाराज की भव्य मूर्तियों की स्थापना की गई। कार्यक्रम में सरपंच मीरसिंह, पंचायत समिति सदस्य सूबेसिंह, राजमल, कृष्ण कुमार, नवीन, बलबीर सिंह ग्रेवाल, पंडित मोनू कुड़ल, सरपंच प्रमिला देवी, ज्ञाना देवी, सजना देवी, रत्ना देवी, ज्ञीना

ठेकेदार धनसिंह के निधन पर जताया शोक

बाढ़ड़ा। गांव जेवली निवासी ठेकेदार धनसिंह का ८६ वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके निधन पर अनेक सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने पहुंच कर गहरी संवेदना प्रकट की। गांव जेवली निवासी ठेकेदार धनसिंह श्योराण के निधन पर सरपंच सोमेश श्योराण, प्रज्ञा शिक्षण संस्थान अध्यक्ष कृष्ण जेवली, समाजसेवी मुकेश जेवली, पूर्व सरपंच रामनिवास, पूर्व प्राचाय अमरचंद श्योराण, कैप्टन शिबलाल, सुरजभान, सूबेसिंह, राजकुमार, बघड़ावत सिंह आदि ने पहुंच कर गहरीं संवेदना प्रकट की।

दिग्विजय बाढ़ड़ा लेंगे कार्यकर्ताओं की बैठक

बाढ़ड़ा। जननायक जनता पार्टी 26 फरवरी को दादरी में यौद्धा स मेलन व 13 मार्च को हांसी जिला मु यालय पर जजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा1टर अजय सिंह चौटाला का जन्मदिन युवा प्रेरणा दिवस के रूप में मना रही हैं। और युवा जिला योद्धा सम्मेलन के अन्तर्गत 26 फरवरी को दादरी में युवा जिला योद्धा सम्मेलन आयोजित किया जाएगा जिसके लिए बैठक में जिम्मेवारी सौंपी जाएगी। यह जानकारी जिला प्रेस प्रवक्ता राजेंद्र हूई व युवा जजपा जिला अध्यक्ष दीपेश कारी ने दी। उन्होंने बताया युवा योद्धा सम्मेलन की तैयारियों का जायजा लेने के लिए जजपा युवा प्रदेश अध्यक्ष दिग्विजय सिंह चौटाला 26 फरवरी को लोहारू रोङ बाढङा कार्यालय में दादरी और बाढङा हल्के की संयुक्त जिला स्तरीय बैठक को संबोधित करेंगे।

एमएनएस राजकीय महाविद्यालय में सांस्कृतिक उत्सव में दिखाई प्रतिभा

मेहंदी में करीना, रंगोली में साक्षी व पेंटिंग में हीना प्रथम

विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ाती सांस्कृतिक गतिविधियां: प्राचार्य श्योराण

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

महाराजा नीमपाल सिंह राजकीय महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम झंकार का शनिवार को रंगारंग कार्यक्रमों के साथ संपन्न हुआ। इस मौके पर करवाई गई डिकलेमेशन में अक्षित, मेहंदी में करीना, रंगोली में साक्षी, पेंटिंग में हीना, संस्कृत स्लोग्न में दी पि का , कोलाज मेकिंग में स्वीटी, हिंदी कविता में नीतिका, पंजाबी कविता में दीपिका, हरियाणवी कविता में अंकित, अंग्रेजी कविता में अक्षित, सोलो डांस हरियाणवी में स्नेहा, ड्यूट डांस में स्नेहा व शशी, क्लासिक डांस में निकिता, वेस्टर्न डांस सोलो में रीना गीत/गजल/भजन में दीपिका प्रथम ने प्रथम स्थान जीता। आयोजन का सफल संचालन सांस्कृतिक प्रकोष्ठ प्रभारी रणधीर सामोता के कुशल निर्देशन में हुआ। कार्यक्रम को सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. आनंदवर्धन शर्मा का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, जिनके अनुभव ने आयोजन को भव्यता प्रदान की। पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान प्राचार्य जगबीर सिंह श्योराण व उपप्राचार्य डॉ. जगवीर सिंह मान ने विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित किया। प्राचार्य ने कहा कि सांस्कृतिक गतिविधियां केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि ये विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ाती हैं और समग्र व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के सदस्य कपिल शर्मा, रेखा चौहान, योगमाया, डॉ. तरूणा, पूजा शेखावत, सरिता रानी और मोनिका यादव ने मुख्य भूमिका निभाते हुए हर गतिविधि का सुचारू प्रबंधन किया।

संस्कृत स्लोग्न, पंजाबी कविता व गीत/गजल में दीपिका व हिंदी कविता व क्लासिक डांस में निकिता प्रथम

भिवानी। प्रतिभागियों को पुरस्कृत करते अतिथि।

भिवानी। हरियाणवी नृत्य की प्रस्तुति देती छात्राएं। *फोटो: हरिभूमि*

हरियाणवी कविता में अंकित प्रथम

पंजाबी कविता में दीपिका प्रथम, जीया द्वितीय व स्नेहा तृतीय, हरियाणवी कविता में अंकित प्रथम, जीया द्वितीय व स्नेहा तृतीय, अंग्रेजी कविता में अक्षित, शशी द्वितीय व रीना तृतीय रही, सोलो डांस हरियाणवी में स्नेहा प्रथम, जीया द्वितीय व शशी तृतीय रही, ड्यूट डांस में स्नेहा व शशी प्रथम, जीया व सोनी द्वितीय द्वितीय, क्लासिक डांस में निकिता प्रथम, साक्षी द्वितीय, चांदनी तृतीय, वेस्टर्न डांस सोलो में रीना प्रथम, सोनी द्वितीय, गीत/गजल/भजन में दीपिका ने प्रथम व अंकित ने द्वितीय स्थान हासिल किया।

मंच संचालन डॉ. रेखा ने किया

मंच संचालन डॉ. रेखा चौहान ने किया। महाविद्यालय के प्रेस प्रभारी डॉ. सुरेंद्र कुमार ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के परिणामों की जानकारी देते हुए बताया कि डिकलेमेशन में अक्षित प्रथम, सोनी द्वितीय जीया तृतीय रही। मेहंदी में करीना प्रथम, साक्षी द्वितीय व मोनिका तृतीय रही। वहीं रंगोली में साक्षी प्रथम व अंकिता द्वितीय रही। पेंटिंग में हीना प्रथम, खुशबू द्वितीय व रीना तृतीय रही। संस्कृत स्लोग्न में दीपिका प्रथम, नीतिका द्वितीय व अंकित तृतीय रही, कोलाज मेकिंग में स्वीटी प्रथम, नीतिक द्वितीय, हिंदी कविता में नीतिका प्रथम, अंकित द्वितीय व रीना तृतीय स्थान पर रही। इस मौके पर मुख्य रूप से प्रोफेसर राजकुमार शर्मा, हरिओम शर्मा, अनिल सिंघल, प्रवीण यादव, आनंद कुमार, सुरेंद्र नरवाल, कुलवीर सिंह, राकेश वर्मा व मोनू कुमार आदि मौजूद रहे।

भिवानी। सांस्कृतिक प्रस्तुति देते स्वयंसेवक। *फोटो: हरिभूमि*

अंगारों पर जिस्म जलाया और देशभक्ति गीतों पर दी प्रस्तुतियां

- सेवा परमो धर्म का अनुसरण कर समाजसेवा में आगे बढ़े युवा: विधायक सर्राफ
- जोहड़ीवाला हनुमान मंदिर में वैश्य महाविद्यालय का एनएसएस शिविर संपन्न

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

जोहड़ीवाला प्राचीन हनुमान मंदिर में चल रहा वैश्य महाविद्यालय की एनएसएस इकाईयों का सात दिवसीय एनएसएस शिविर शनिवार को संपन्न हो गया। इस मौके पर ट्रस्ट के प्रधान शिवरतन गुप्ता व विधायक घनश्याम दास सर्राफ ने शिरकत की। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना युवा वर्ग को सेवा करने का जज्बा पैदा करता है। उन्होंने युवाओं को सेवा परमो धर्म का अनुसरण कर समाजसेवा के माध्यम से अपने भविष्य की नीव मजबूत करने की सीख दी। विशिष्ट अतिथि चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के डीन प्रो संजीव कुमार ने शिरकत की। विधायक सर्राफ व महंत चरणदास महाराज सहित अनेक अतिथियों ने द्वीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की। कार्यक्रम की शुरुआत स्वयंसेवकों ने राष्ट्रीय सेवा योजना गीत से की।

अतिथियों का स्वागत

इसके पश्चात स्वयंसेवकों ने अतिथियों का पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया। प्राचार्य डॉ. संजय गोयल ने कहा कि आज के तनावपूर्ण वातावरण में ऐसे कैंपो की बहुत सख्त जरूरत है। मंच का संचालन स्वयंसेविका छवि ने किया। स्वयंसेवक रक्षित एवं आर्यन ने तलवारों पर सिर वार दिए व अंगारों पर जिस्म जलाया देशभक्ति गीतों पर प्रस्तुतियां दी। स्वयंसेवकों जतिन,नीतू, अमन, किरण, चेतना व कीर्ति ने अनेकता में एकता को दर्शाती डांस की प्रस्तुति देकर सबको झूमने पर मजबूर कर दिया। स्वयंसेवकों तुषार गोयल, दीक्षा, किरण ने धार्मिक नाटक रक्तबीज का सुंदर चित्रण किया। नन्ही कलाकार आरुषि ने हरियाणवी गीत पर बेहतरीन नृत्य की प्रस्तुति दी। अंत में शिविर की संयोजक कार्यक्रम अधिकारी डॉ. कामना कौशिक एवं डॉ. मोहनलाल ने अतिथियों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर राष्ट्रपति अवॉर्डी अशोक भारद्वाज भी मौजूद रहे।

विधायक ने सुनीं लोगों की समस्याएं

- जब तक विधायक रहूंगा, कोई समस्याएं नहीं आने दूंगा: कपूर

हरिभूमि न्यूज ⏭ बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा के विश्राम गृह में हर शनिवार की भांति जनता दरबार का आयोजन किया, जिसमें बड़ी संख्या में कस्बावासियों एवं ग्रामीणों ने समस्या रखी। विधायक वाल्मीकि ने लोगों की समस्याएं सुनीं। जनता दरबार में अधिकतर समस्याएं बिजली, पानी व खेतों के रास्ते पक्के करवाने की थी। विधायक ने विभिन्न गांवों से आए लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याओं को गंभीरता सुना तथा संबंधित अधिकारियों को त्वरित समाधान के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

बवानीखेड़ा। विश्राम गृह में समस्याएं सुनते विधायक कपूर वाल्मीकि।

जनसेवा ही हमारा संकल्प

नागरिक अस्पताल के साथ लगते मार्ग के प्रार्थना पत्र पर विधायक ने आश्वासन देते हुए बताया कि जल्द इस मार्ग का निर्माण करवाया जाएगा। विधायक ने बताया कि जनसेवा ही हमारा संकल्प है और प्रत्येक नागरिक की समस्या का समयबद्ध समाधान सुनिश्चित करना हमारी प्राथमिकता है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में आज पूरा देश विकास की राह पर चल रहा है। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी पूरे प्रदेश में समान विकास करवा रहे हैं। उन्होंने कहा कि जब तक वे विधायक हैं, लोगों को किसी प्रकार की समस्याएं नहीं आने देंगे।

हरियाणवी नृत्य प्रतियोगिता में दिव्या प्रथम

हरिभूमि न्यूज ⏭ लोहारू

चौधरी बंसीलाल राजकीय महाविद्यालय में शनिवार को सांस्कृतिक उत्सव 'उड़ान' का आयोजन किया गया, जिसमें युवाओं ने अपनी प्रतिभा के जमकर रंग बिखेरे। उत्सव में रागिनी, हिंदी गीत, एकल नृत्य, हरियाणवी नृत्य, पंजाबी नृत्य, क्लासिकल नृत्य, राजस्थानी नृत्य एवं कविता पाठ जैसी विभिन्न सांस्कृतिक विधाओं का आयोजन किया गया।

जिसको लेकर छात्र छात्राओं में काफी उत्साह देखने को मिला। कॉलेज प्राचार्य डॉ मुकेश कुमार चहल अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में कॉलेज की पूर्व प्राचार्या रही डॉ सुनीता यादव ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत करते हुए मां सरस्वती प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। डॉ सुनीता यादव ने कॉलेज के कार्यकाल की याद ताजा की और युवाओं को अनुशासन के साथ मेहनत करने के लिए प्रेरित किया। मंच संचालन डॉ. सुजीत कुमार एवं डॉ. पूनम ने किया जबकि निर्णायक मंडल में डॉ. अजय वशिष्ठ, डॉ. अंजू एवं डॉ. विजय कुमार शामिल रहे। कार्यक्रम की क्लासिकल नृत्य में स्पर्धा में नीलम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

हरियाणवी नृत्य प्रतियोगिता में दिव्या, भारती एवं प्रदीप ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। पंजाबी नृत्य में समर, प्रीति एवं भारत ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान हासिल किया।

लोहारू। चौ बंसीलाल कॉलेज में उड़ान उत्सव में प्रस्तुति देती छात्रा।

नीलम की प्रशंसा की

रागिनी में दिनेश (एम.ए. हिंदी) एवं साक्षी ने क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया, जबकि हिंदी गीत प्रतियोगिता में सतीश एवं तरुण ने क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया। वहीं राजस्थानी नृत्य प्रतियोगिता में बीएससी की छात्रा ललिता ने अपनी उत्कृष्ट प्रस्तुति से प्रथम स्थान हासिल कर सभी का ध्यान आकर्षित किया। प्राचार्य डॉ. मुकेश कुमार चहल ने कहा कि महाविद्यालय के विद्यार्थियों की प्रतिभा, आत्मविश्वास और अनुशासन सराहनीय है। उन्होंने नीलम की प्रस्तुति की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस प्रकार की उत्कृष्ट प्रस्तुति महाविद्यालय की सांस्कृतिक समृद्धि और विद्यार्थियों की प्रतिभा का जीवंत उदाहरण हैं।

स्वयंसेवकों ने पर्यावरण संरक्षण, हरियाली बढ़ाने एवं प्रकृति के प्रति किया जागरूक

बाढ़ड़ा। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई वन एवं टू द्वारा जांगिड़ धर्मशाला में आयोजित सात दिवसीय विशेष शिविर के चौथे दिन एन.एस.एस अधिकारी प्रो.मीना व डॉ मुकेश कुमार तथा स्वंयसेविकाओं के द्वारा योगाभ्यास व लक्ष्य गीत प्रस्तुत कर कार्यक्रम की शुरुआत की। महाविद्यालय में स्वंयसेविकाओं द्वारा पौधारोपण किया गया । पौधारोपण के माध्यम से स्वंयसेविकाओं ने पर्यावरण संरक्षण, हरियाली बढ़ाने तथा प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने का संदेश दिया। स्वयंसेवकों ने पौधों की नियमित देखभाल का संकल्प भी लिया, जिसमें स्वंयसेविकाओं ने अपनी रचनात्मकता एवं कलात्मक प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कार्यक्रम अधिकारियों ने स्वंयसेविकाओं की सक्रिय भागीदारी की सराहना कीं। मीना ने स्वयंसेवकओं को संबोधित करते हुए कहा कि एन.एस.एस. केवल एक गतिविधि नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण का सशक्त माध्यम है।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8814999151, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

सुरमाला प्रतियोगिता में स्वाती-साक्षी प्रथम

- आदर्श महिला महाविद्यालय में राज्य स्तरीय अंतर-महाविद्यालय उत्सव का आयोजन
- विभिन्न महाविद्यालयों के 113 प्रतिभागियों ने की भागीदारी

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

आदर्श महिला महाविद्यालय में राज्य स्तरीय अंतर महाविद्यालय उत्सव 'स्पर्धा-2026' का शनिवार को समापन हुआ। समारोह में बतौर वरिष्ठ अधिवक्ता शिवरत्न गुप्ता रहे तथा प्रतियोगिता का आयोजन प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल के सान्निध्य में हुआ। प्रतियोगिता में राज्य के विभिन्न महाविद्यालयों से 113 प्रतिभागियों ने उपस्थित दर्ज करवाई। कार्यक्रम का शुभारंभ बतौर मुख्यातिथि महाविद्यालय प्रबंधकारिणी अध्यक्षा सुनीता गुप्ता ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ किया। इस मौके पर प्रबंधकारिणी समिति के संयुक्त सचिव पवन केडिया, कमलेश चैधरी, कार्यक्रम संयोजिका डॉ. अर्पणा बत्रा, नीरू चावला, डॉ. रिंकु अग्रवाल, डॉ. निशा शर्मा व डॉ. दीपू सैनी मौजूद रहे।

भिवानी। कार्यक्रम का अवलोकन करते अतिथि। *फोटो: हरिभूमि*

टीआईटी कॉलेज छाया

राज्य स्तरीय अंतर-महाविद्यालय उत्सव में टीआईटी कॉलेज भिवानी ने बहुंमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन कर ओवरऑल ट्राफी पर कब्जा जमाया। काव्य सुरभि प्रतियोगिता में अंग्रेजी साहित्य में प्रथम स्थान केएम कॉलेज ऑफ एज्यूकेशन भिवानी की छात्रा मोनिका, द्वितीय सत जिंदा कल्याण कॉलेज कलानौर की छात्रा खुशी ने, तृतीय स्थान आदर्श महिला महाविद्यालय की छात्रा प्रिसा ने, हिंदी साहित्य में प्रथम स्थान आदर्श महिला महाविद्यालय की रविना, द्वितीय राजीव गांधी गवर्मेंट कॉलेज की प्रियंका ने, तृतीय स्थान आदर्श महिला महाविद्यालय की राधिका ने प्राप्त किया।

कैंप में स्वदेशी एवं साफ सफाई पर किया जागरूक

- राजकीय महाविद्यालय मांढ़ी हरिया में एनएसएस कैंप

हरिभूमि न्यूज ⏭ बाढ़ड़ा

राजकीय महाविद्यालय मांढ़ी हरिया में आयोजित सात दिवसीय एनएसएस कैंप के पॉचवें दिन का आरंभ मॉ सरस्वती वन्दना तथा द्वीप प्रज्वलन से किया गया। एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी महेंन्द्र सिंह द्वारा स्वयंसेवको व स्वयंसेविकाओ के साथ गॉव में प्रभात फेरी भजन-गीत के साथ निकाली जिसमें उन्होंने प्रभात फेरी के माध्यम से गांव के लोगो को स्वच्छता और सामाजिक जागरूकता का संदेश दिया। इसके पश्चात स्वयंसेवको व स्वयंसेविकाओं ने एनएसएस प्रार्थना की। इसके पश्चात महाविद्यालय प्रांगण में स्वयंसेवको व स्वयंसेविकाओं द्वारा शारीरिक व्यायाम, योगासन एवं प्राणायाम किए, जिसमें महेंद्र सिंह द्वारा स्वयंसेवको व स्वयं सेविकाओं को स्वास्थ्य एवं अनुशासन का महत्व समझाया गया। कार्यक्रम के अगले चरण में सभी स्वयं सेवको व स्वयं सेविकाओं ने महाविद्यालय परिसर के पौधों की साफ-सफाई की । इस दौरान स्वयंसेवको व स्वयंसेविकाओं ने स्वच्छता के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाई। महिला महाविद्यालय, झोझू कलां से डॉ. सुदेश, सहायक प्राध्यापिका इतिहास ने विस्तार व्याख्यान दिया।

गांव बापोड़ा में सांग महोत्सव के पांचवें दिन उमड़ा जनसैलाब

सांगी कलाकारों ने राजा उत्तानपाद ध्रुव भगत सांग का किया मंचन, गो सेवा का दिया संदेश

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

बापोड़ा में हरियाणा कला परिषद रोहतक मंडल क सहयोग से चल रहे सात दिवसीय सांग महोत्सव मे पांचवें दिन बाबा पंचवीर गौशाला में गौ माता के रख-रखाव और हरे-सूखे चारे के सहायतार्थ भव्य धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया। ये आयोजन गांव बापोड़ा, बीरण व दांग पंचायतों के सहयोग से हुआ। वार्षिक कार्यक्रम में प्रसिद्ध सांगी वेदप्रकाश ने पंडित मांगेराम द्वारा रचित ऐतिहासिक सांग राजा उत्तानपाद व ध्रुव भगत का संजीव मंचन किया तथा गो सेवा का संदेश दिया। कार्यक्रम का उद्देश्य गौशाला में रह रही गौ माताओं के लिए चारे और अन्य सुविधाओं के लिए कोष एकत्रित करना था।

भिवानी। राजा उत्तानपाद-ध्रुव भगत सांग का मंचन करते कलाकार।

सांग में मार्मिक दृश्य दिखाए

मंचन के दौरान सांगी वेदप्रकाश ने राजा उत्तानपाद के जीवन के उस दौर का वर्णन किया, जब राजा और उनकी रानी सुनीति संतान न होने के कारण गहरे शोक में डूबे रहते थे, जब देवर्षि नारद महलों में पधारे, तो रानी ने अपनी व्यथा सुनाई। नारदजी ने बताया कि पुत्र रत्न की प्राप्ति संभव है, लेकिन इसके लिए रानी को कठिन त्याग करना होगा और राजा का दूसरा विवाह करवाना होगा। कुल की मर्यादा और संतान की चाह में रानी सुनीति ने अपनी छोटी बहन सुरुचि के साथ राजा का विवाह करवाया। विवाह के बाद छोटी रानी सुरुचि ने महलों पर अधिकार कर लिया और रानी सुनीति को बाहर निकलवा दिया। सांग के मार्मिक दृश्यों में दिखाया गया कि कैसे सुरुचि के अपमान से दुःखी होकर बालक ध्रुव राजपाठ त्यागकर वनों में तपस्या के लिए चले गए और अपनी अटूट भक्ति से ध्रुव तारा के रूप में अमर हुए। अंत में बीरण के सरपंच सुल्तान सिंह फोगट, दांग के सरपंच राजेंद्र सिंह, बापोंड़ा के सरपंच सुग्रीव सिंह व नरेश कौशिक मंढाना ने शिरकत की। आयोजन समिति सदस्यों ने बताया कि गौ माता की सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है।

श्रीश्याम बरनाला मंदिर का होगा जीर्णोद्वार

- करोड़ों की दानराशि की घोषणा से खुशी की लहर

बाढ़ड़ा। गांव हंसावास कलां के प्रसिद्ध श्री श्याम बरनाला मंदिर का जल्द ही जीर्णोद्वारर होगा जिससे यह भव्य मंदिर के रुप में विकसित होगा। पांच सौ साल पहले से श्रद्धा के मु2य केन्द्र बिंदू बने मंदिर की पहचान ठाकुर दास के नाम से होती है और मंदिर के पास खुद की सैंकड़ों एकड़ कृषि भूमि है। मंदिर कमेटी के साथ आयोजित बैठक में क्षेत्र के सामाजिक व धार्मिक संगठनों ने लाखों रुपयों की धनराशि दान देने की घोषणा से श्रद्धालुओं में खुशी की लहर दौड़ गई है। श्री श्याम मंदिर बाबा बरनाला धाम हंसावास कलां स्थित पवित्र धार्मिक स्थल को लेकर श्रद्धालुओं में गहरा धार्मिक जुड़ाव बना हुआ है।

तेज रफ्तार से थका मन चाहे सुकून भरी स्लो लाइफ

पिछली एक सदी में तकनीकी विकास में क्रांति के साथ ही लोगों की जीवनशैली भी बहुत तेज रफ्तार वाली हो गई थी। लेकिन कोविड के बाद से लोगों की सोच बदलने लगी और जल्दी से सब कुछ पा लेने के बजाय जीवन में सुकून को तरजीह देने लगे हैं। यही वजह है कि पूरी दुनिया में अब लोग तेज रफ्तार से ऊबकर स्लो लाइफ की तरफ धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं।

कवर स्टोरी
लोकमित्र गौतम

एक समय तक 'तेज रफ्तार' होना, रोमांच का सबब माना जाता था, कामयाबी की निशानी थी। इसलिए अधिकांश लोग तेज-तेज और तेज की तरफ पिछली लगभग एक सदी से दौड़ते रहे हैं। इस भागम-भाग में वाकई इंसान ने अपनी जिंदगी की रफ्तार बहुत तेज कर ली। फास्ट इंटरनेट, बुलेट ट्रेन, आवाज की गति से उड़ते हवाई जहाज, इंस्टेंट अपडेट और कुछ महीने या साल में ही करियर की बुलंदी छूना, ये सब इसी तेज रफ्तार के उदाहरण हैं। लेकिन बीते कुछ समय से अब अधिकतर इंसान इस तेज रफ्तार जिंदगी को रोमांच की बजाय आफत का सबब मानने लगे हैं। यही कारण है कि अब दुनिया, तेज रफ्तारी से रोमांचित नहीं है बल्कि स्लो लाइफ की तरकीबें खोज रही है। अमेरिका से लेकर अफ्रीका तक आज स्लो लाइफ न्यू लाइफस्टाइल बन रही है, क्योंकि लोग मशीन बनने से थक चुके हैं, अब वे थोड़ा ठहरकर जीना चाहते हैं।

क्यों लौट रहे हैं धीमे की ओर: पूरी दुनिया में लोग स्लो लाइफ की तरफ लौट रहे हैं, तो इसकी वजह है कि पिछले कई दशकों के भागम-भाग के कारण परिवार की संरचना कमजोर होती जा रही है। फोन आपको किसी क्षण बेफिक्र नहीं होने देता, फुर्सत में नहीं रहने देता। नए-नए रेडीमेड पकवानों की कुछ मिनटों में सप्लाई ऐसे होने लगी है कि लोग अपने स्वाद का स्थाई सुख ही भूल गए हैं। नींद अब दुनिया की सबसे बड़ी नियामत बन चुकी है और सबसे बड़ी बात यह है कि इंसान खुद को ही भूलने लगा है। यही वजह है कि अब अमेरिका हो या एशिया, अफ्रीका और यूरोपीय देश के लोग परिवार के साथ समय बिताना चाहते हैं। कुछ घंटे या हफ्ते में एक दिन कम से कम बिना फोन के रहना चाहते हैं। कभी आराम से धीरे-धीरे पकाकर अपनी मनपसंद डिश खाना चाहते हैं और चाहते हैं कि कम से कम हफ्ते का एक दिन तो ऐसा हो, जब सोकर जगने का टाइमर सेट न हो। इस सबके बीच लोग अब अपने साथ भी कुछ घंटे, कुछ दिन बिताना चाहते हैं, इसलिए लोग तेज रफ्तार को छोड़कर धीमी और सुकून भरी जिंदगी की तरफ लौटना चाहते हैं।

स्लो लाइफ का सही मतलब: भले ही एक दौर में धीमी रफ्तार, आलस्य का पर्याय मानी जाती रही हो, लेकिन आज जब फास्ट लाइफ को विश्व स्वास्थ्य संगठन बर्नआउट और डिप्रेशन का सबसे बड़ा कारण बता रहा है, तब पूरी दुनिया में स्लो लाइफ या धीमे जीवन की ओर बढ़ने को आलस्य की निशानी नहीं बल्कि नई चेतना का पर्याय माना जा रहा है। वास्तव में स्लो लाइफ का मतलब काम को अधूरा छोड़ देना नहीं है। जीवनशैली से समझौता नहीं है और न ही स्लो लाइफ का मतलब घर में पड़े रहना है बल्कि स्लो लाइफ का मतलब है कम

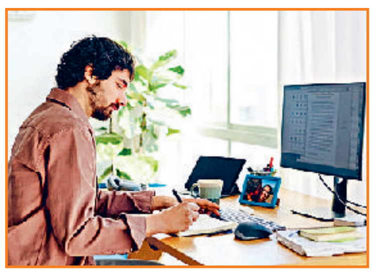

लेकिन अर्थपूर्ण काम करना। स्लो लाइफ का मतलब है डिजिटल डिवाइसेस से घिरे न रहना। बीच-बीच में पूरी तरह से डिजिटल डिटॉक्स होना। स्लो लाइफ का मतलब है स्थानीय जीवन का आनंद लेना और पारिवारिक जीवनशैली का लुत्फ उठाना। स्लो लाइफ का मतलब है, अपने पीढ़ियों पुराने व्यंजनों का आनंद लेना और प्रकृति से भरपूर जुड़ाव रखना। स्लो लाइफ का मतलब है रिश्तों की गुणवत्ता बढ़ाना, न कि उनकी संख्या बढ़ाना। और स्लो लाइफ का एक अंतिम मतलब है हर पल उपलब्ध होने की मजबूरी से मुक्त होना।

दुनिया इसलिए थकी रफ्तार से: द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से लगातार दुनिया तेज रफ्तार जीवनशैली को कामयाबी और स्टेटस सिंबल की तरह पेश करती रही है, तो सवाल है फिर आखिर 21वीं सदी के दो दशक बाद आकर दुनिया का तेज रफ्तारी से मोहभंग क्यों हो गया? इसके पीछे कई महत्वपूर्ण कारण हैं। कोविड के बाद लोगों को जिंदगी की असलियत का एहसास हो गया है कि चाहे जितनी बड़ी कामयाबी हो, चाहे जितनी सुख-सुविधाएं हों और चाहे जितनी संपन्नता हो, लेकिन अगर प्रकृति खफा हो गई, तो जिंदगी की कोई कीमत नहीं रहती। पल भर में सारी कामयाबी, सारी तेज रफ्तारी धरी की धरी रह जाती है। कोविड ने एहसास कराया कि जीवन अस्थायी है। लोग पहली बार जीवन के अस्थायीपन और नश्वरता से दो-चार हुए। यही वह समय था, जब बिना दफ्तर गए भी नौकरी कर सकने का विकल्प हासिल हुआ। जी हां, वर्क फ्रॉम होम ने लोगों को बताया कि अगर दफ्तर न जाना पड़े तो भले एक घंटे ज्यादा भी काम करना पड़े, लेकिन दफ्तर के रास्ते के जोखिम, तनाव और अनुपयोगी समय से बच सकते हैं। कोविड ने लोगों को डिजिटली ओवरलोड कर दिया। लगातार मीटिंग्स, सोशल मीडिया की इंगेजमेंट और नोटिफिकेशंस का सिरदर्द लगातार पेशंस की परीक्षाएं लेती रही और अंततः लोग इस तेज

रफ्तारी से आजीज आ गए।

शहरों से गांव की तरफ वापसी: पूरी 20वीं सदी में और 21वीं सदी के पहले लगभग दो दशकों तक पलायन का मतलब गांव से शहर की ओर जाना ही होता रहा है। लेकिन कोविड के बाद यूरोप में 16 प्रतिशत और अमेरिका में 6 प्रतिशत लोग शहर छोड़कर गांवों में बस गए। भारत में भी उच्च आयवर्ग के 2 प्रतिशत लोग न सिर्फ बड़े शहरों को छोड़कर अपनी जड़ों की ओर रहने के लिए लौटे बल्कि जो पारंपरिक रूप से अपने गांवों या पैतृक स्थानों में नहीं गए, वे भी तेज रफ्तार महानगरों को छोड़कर स्लो मोशन की जिंदगी वाले जंगलों, पहाड़ों के बीच में गांव या गांवनुमा कस्बों की ओर रुख कर गए। मेट्रो शहरों में डेढ़ से दो फीसदी लोग छोटे शहरों या कस्बों की तरफ लौटे। हालांकि भारत में शहरों से गांव की ओर वापसी का आंकड़ा लगभग न के बराबर रहा, क्योंकि भारत के गांव सामान्य सुख-सुविधा वाली जिंदगी के अनुकूल नहीं हैं। इसलिए भारत में बड़े लोग या तो पहाड़ों में बसे छोटे शहरों या कम औद्योगिक और धुर खेतिहर इलाकों के कस्बों की तरफ लौटे। कोविड के बाद ही लोगों ने अपनी छतों पर बागवानी का रोमांच महसूस करना शुरू किया। स्थानीय बाजारों की वापसी हुई, पारंपरिक जीवनशैली में योग और ध्यान की हिस्सेदारी बढ़ी और मानसिक स्वास्थ्य को भी महत्वपूर्ण माना जाने लगा। इससे लोगों ने नींद का सुख महसूस किया, खुद उगाकर सब्जियां खाईं तो स्वाद के साथ आत्मसंतोष महसूस किया, रिश्तों में स्थायित्व और हार्मोनल हेल्थ में बेहतरी का एहसास किया। इसलिए स्लो लाइफ की रेटिंग जो हमेशा फास्ट लाइफ से नीचे रहती थी, पहली बार उससे ऊपर हुई।

कुछ भ्रम भी टूटे: दूसरे विश्वयुद्ध के बाद से ही पूरी दुनिया में यह मान लिया गया था कि स्लो लाइफ का मतलब है- धीमा उत्पादन, धीमा पूंजी निर्माण, मतलब गरीबी और बदहाली। लेकिन कोविड के दौरान और उसके बाद स्लो लाइफ का मतलब यह नहीं रहा। लोगों की सोच में बदलाव आया। कोविड के बाद की स्लो लाइफ ने दुनिया को दिखाया कि धीमे होने का मतलब नाकारा होना नहीं है। धीमे होने का मतलब अर्थव्यवस्था का नुकसान नहीं है और न ही धीमे होने का मतलब उत्पादनहीनता है। स्लो जीवनशैली ने ज्यादा संतुष्टि दी और बेचैन उपभोगवाद पर लगाम लगाया। सबसे बड़ी दौलत रिश्तों में आई गर्मजोशी से मिली। लब्बोलुआब यह कि लोगों को, मजबूरी और उदासीनता में शुरू की गई स्लो लाइफ रास आ गई और अब धीरे-धीरे इससे मोहब्बत बढ़ती ही जा रही है। *

स्लो लाइफ की तरफ धीरे-धीरे बढ़ने के तरीके

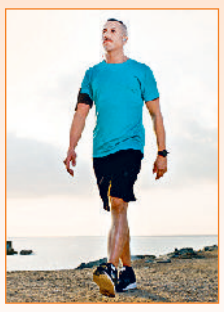

- हर दिन 30 मिनट किसी भी तरह की स्क्रीन से दूर रहें। चाहे टीवी की स्क्रीन हो, मोबाइल की या लैपटॉप की। इस दौरान फोन से नहीं, आस-पास की दुनिया से जुड़ें।
- सप्ताह में कम से कम एक दिन ऐसा रखें, जिसकी पहले से कोई प्लानिंग न हो। एक तरह से इस दिन को कुछ न करने की मस्ती का दिन बनाएं यानी नो प्लान डे।
- पैदल चलना सीखें। एक जमाने में आम आदमी हर दिन कम से कम 5-7 किलोमीटर पैदल चलता था। अब कई लोग ऐसे हैं, जो घर से बाहर सौ मीटर भी हर दिन पैदल नहीं चलते। अगर स्लो लाइफ का लुत्फ उठाना चाहते हैं तो फिर से पैदल चलने की तरफ लौटें। पैदल चलने से मन भी प्रसन्न रहता है और तन भी स्वस्थ रहता है।
- काम की सीमाएं तय करें। दिन में निश्चित घंटों तक ही काम करें और हर दिन के काम की एक मात्रा तय कर लें। यह नहीं कि जब तक जग रहे हैं, काम करते रहें।
- धीमी जिंदगी का रोमांच महसूस करने के लिए दुनिया से भले कम जुड़ें, पर अपने आपसे दोस्ती जरूर करें। खुद से दोस्ती करना भी एक अव्यक्त सुख की स्थिति में रहना है।

ह्यूमन नेचर
शैलेंद्र सिंह

आमतौर पर माना जाता है कि इंट्रोवर्ट स्वभाव के लोगों में आत्मविश्वास और योग्यता की कमी होती है। जबकि यह केवल अलग तरह की एक पर्सनालिटी होती है। इस पर्सनालिटी के कुछ फायदे हैं तो वहीं कुछ नुकसान भी हैं।

न तो वीकनेस-न ही बीमारी अलग होती है इंट्रोवर्ट पर्सनालिटी

आधुनिक मुखर और सोशल मीडिया प्रधान समाज में अंतर्मुखी यानी इंट्रोवर्ट होना अकसर गलतफहमियों का विषय बन जाता है। जबकि अनेक वैज्ञानिक शोध यह साबित करते हैं कि अंतर्मुखी होना न तो किसी तरह की कोई कमजोरी है और न ही बीमारी। हांस आइजेंक के व्यक्तित्व सिद्धांत के मुताबिक अंतर्मुखी और बहिर्मुखी होना व्यक्तियों में मस्तिष्क की उत्तेजना के अलग-अलग स्तरों का होना है। अंतर्मुखी लोगों का बेसलाइन पहले से अधिक होता है, इसलिए वे शोर, भीड़ और अत्यधिक सामाजिक उत्तेजना से जल्द थक जाते हैं। इसलिए वह बहिर्मुखी लोगों के विपरीत

ऐसी तमाम स्थितियों में शांत और खुद तक सीमित रहते हैं। यह उनकी मात्र जैविक वास्तविकता होती है।

मुखर दौर में शांत लोग: आज के तेज आवाजों या शोरगुल से भरे दौर में कई बार अंतर्मुखी लोग खुद को हाशिए पर महसूस करने लगते हैं। लेकिन अगर अंतरराष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक शोधों की नजर से देखें तो अंतर्मुखी लोगों का यह हाशियाकरण उनकी अक्षमता नहीं बल्कि समाज की अपेक्षाओं का नतीजा है। इसलिए जेरोम कगन और हांस आइजेंक जैसे वैज्ञानिकों ने अपने शोध के जरिए साबित किया था कि अंतर्मुखी होना कोई ऐसा व्यवहार नहीं होता, जिसे लोग सीखें या उनमें वह परवरिश के कारण आए। इनके मुताबिक वास्तव में अंतर्मुखी होना एक किस्म की जैविक संरचना से जुड़ा तथ्य है, क्योंकि अंतर्मुखी लोगों का नर्वस सिस्टम दूसरे सामान्य लोगों के मुकाबले कहीं अधिक संवेदनशील होता है। लेकिन आधुनिक दौर में एक्सट्रोवर्ट यानी बहिर्मुखी लोगों को ही आदर्श मान लिया जाता है। इसके विपरीत इंट्रोवर्ट लोगों को महत्व और मान्यता नहीं दी जाती, जो महत्व और मान्यता बहिर्मुखी लोगों के खाते में आती है और इसकी शुरूआत बचपन से ही पहले घर में और फिर स्कूल में हो जाती है। वहां शांत रहने वाले बच्चों को उपेक्षित किया जाता है, भले ही वह कितना भी योग्य क्यों न हो। इसके बाद कॉर्पोरेट दफ्तरों में भी लीडर वही माना जाता है, जो ज्यादा बोलता हो और किसी भी तरह के मामले में त्वरित प्रतिक्रिया करता हो। जबकि कई बार संकट के समय अंतर्मुखी लोग ज्यादा बेहतर निर्णय लेते हैं। खासकर अगर वैज्ञानिकों, लेखकों आदि से जुड़ा कार्य हो। अडम ग्रांट ने अपने शोध से साबित किया कि प्रो-एक्टिव टीमों में अकसर ऐसे लीडर ज्यादा सफल होते हैं।

इंट्रोवर्ट होने के फायदे: इंट्रोवर्ट पर्सनालिटी होने के कई फायदे होते हैं। जैसे-अंतर्मुखी लोगों में गहन सोच और निर्णय क्षमता होती है। ये किसी भी विषय पर अकसर जानकारियों को बहुत गहराई तक प्रोसेस करते हैं और जल्दी में निर्णय लेने से बचते हैं। इसलिए उनके निर्णय अधिकतर सफल, सुरक्षित और सुलझे हुए होते हैं। यही कारण है कि रचनात्मक और जटिल कामों में उनकी गुणवत्ता उच्च स्तर की होती है। ऐसे लोगों में सुनने और सहानुभूति की क्षमता बहिर्मुखी लोगों से ज्यादा होती है। अंतर्मुखी लोग बेहतर श्रोता होते हैं, जिससे रिश्तों में विश्वास और गहराई बनती है। टीम लीडरशिप में यह गुण सहकर्मियों के हुनर को बाहर निकालने में मदद करता है। अंतर्मुखी लोगों में अकेले में लंबे समय तक काम करने की क्षमता और फोकस में बने रहने की प्रवृत्ति होती है। इस कारण ऐसे लोग अनुसंधान, लेखन, डिजाइन जैसे रचनात्मक क्षेत्रों में काफी सफल होते हैं।

इंट्रोवर्ट होने के नुकसान: इस स्वाभाव के कारण इन लोगों में कुछ खामियां भी देखी जाती हैं। मसलन- अकसर ऐसे लोग वर्बल नेटवर्किंग, पब्लिक फेसिंग जॉब्स, सेल्स या राजनीतिक भूमिकाओं में फिट नहीं बैठते। ऐसी जगहों में अव्वल तो ये आते ही नहीं और आते हैं तो सफल नहीं होते हैं। दुनिया में कई काम और कई गतिविधियां ऐसी होती हैं, जो खुले रूप से बातचीत और आत्मप्रचार को तरजीह देती हैं। इस मामले में ये कमजोर पड़ते हैं। कई अध्ययनों में यह सामने आया है कि ऐसे लोगों में

अवसाद या अकेलेपन से घिरने का जोखिम बना रहता है। लेकिन यह सभी अंतर्मुखी लोगों के लिए सच नहीं होता। आज के मुखर युग में शांत या गंभीर रहना अकसर आत्मविश्वास की कमी समझ लिया जाता है। इसलिए आज के दौर में ऐसे लोग कई बार प्रमोशन पाने, मान्यता हासिल करने और सार्वजनिक मंचों पर अपनी कामयाब उपस्थिति बनाने में नाकाम रहते हैं। *

वासंती दोहे
घमंडीलाल अग्रवाल

टेसू की सरगम छिड़ी

धरती ने सज-धज किया, दुल्हन-सा श्रृंगार।
पीत-वसन से झांकता, मानो पहला प्यार।।
जगा रही है कोकिला, मन में मीठी हूक।
गोरी पी की बाट में, बैठी बन कर मूक।।
भ्रमर सभी हैं पी रहे, फूलों का मकरंद।
पंचम सुर में गूंजते, खुशियों वाले छंद।।
धीमे-धीमे नशे में, पवन चले है खूब।
प्राणी-प्राणी जा रहा, अजब नशे में डूब।।
उर में जागी आग-सी, अंग-अंग उन्माद।
संग उन्हें भी आज लाए जा री सौतन याद।।
कण-कण से गायब हुआ, सर्दी का आतंक।
मुस्कानों ने पा लिए, सबसे ज्यादा अंक।।
धूप कुनमुनी डोलती, गरमाया परिवेश।।
मधुर गंध का बांटता, हर उपवन संदेश।।
सरसों रानी पर चढ़ा, यों यौवन का रंग।
ठुमक-ठुमक कर बोलती, चली पिया के संग।।
बैरागी मन पूछता, किसका है यह खेल।
मौसम का जादू चला, फली प्रीति की बेल।।
टेसू की सरगम छिड़ी, महुआ के हैं ठाठ।
जरा देखिए खुल गई, फगुनाहट की हाट।।

व्यंग्य / अजय अनुरागी

अफसर की टांग

सुना था कानून के हाथ बहुत लंबे होते हैं, लेकिन देखा यह भी गया है कि कुछ अफसरों की टांग भी बहुत लंबी होती है। ऐसे ही एक अफसर की टांग दूर तक पसरी रहती थी। वह बैठता इस कक्ष में था, और टांग उस कक्ष तक फैलाए रखता था। कार्यालय के जिस कक्ष में जाओ वहीं अफसर की टांग घूमती नजर आती थी। अफसर जहां नहीं पहुंच पाता था, वहां भी उसकी टांग पहुंच जाती थी। कई बार अफसर से पहले उसकी टांग उपस्थित रहा करती थी। लोग अफसर से कम उसकी टांग से ज्यादा परेशान रहा करते थे। अब अफसर की टांगों में घंटी कौन बांधे भला!

टांग अफसर से भी ज्यादा चालाक थी। किसी को पास फटकने नहीं देती थी। अफसर की अनुपस्थिति में अफसर की टांग शासन किया करती थी। लोग चाहते थे कि अफसर टांग को थोड़ा लूज करें, तो चैन की सांस आ सके। हालांकि अफसर छोटा-मोटा था, लेकिन उसकी टांग बहुत बड़ी थी। उसकी टांग भरोसे लायक तो थी ही नहीं, फिर भी उस पर भरोसा करना पड़ता था। वह चालाक था और दूसरों की टांग को अपने हित में इस्तेमाल करना जानता था। इसलिए लोग अफसर की टांगों से अपनी टांगें बचाते फिरते थे, क्योंकि उन्हें डर था कि अफसर उनकी टांगों को अपनी टांगों में ना बदल डाले। अफसर टांग का बहुत कच्चा था, इसलिए अपनी टांग को हर जगह टांग कर ले जाता था। टांग के बिना कहीं जाता भी नहीं था। टांग ने इतना प्रभाव जमा लिया था कि अफसर प्रभावहीन होने लगा था। अफसर की दोनों टांगों की दो अलग-अलग परंपराएं थीं। मगर अफसर दोनों को साध लेता था। अकसर लोग अफसर की पहली टांग के भरोसे दूसरी टांग से धोखा खा बैठते थे।

अफसर की टांगों को लेकर लोगों में बड़ा कंफ्यूजन था। पता नहीं पड़ता था कि पहली कौन सी है और दूसरी कौन सी है? लोग जिसे पहली समझते थे, वह दूसरी निकलती थी। जिसे दूसरी समझते थे, वहां टांग होती ही नहीं थी। चालाक अफसर हर मुद्दे पर एक टांग को फंसा कर रखता था तथा दूसरी टांग को बचाकर रखता था। टांग विहीन अफसर नख-दंत विहीन शेर की तरह होता है, जो गुर्रा तो सकता है मगर दबोच नहीं सकता। वह अफसर ही क्या जिसके पास टांग न हो! वह टांग ही क्या जो अड़ना न जाने। अफसर की टांगों की करामात यह थी, कि पहली उठ जाती थी तो दूसरी बैठी रहती थी, और दूसरी उठ जाती थी तो पहली लेट जाती थी। अफसर चाहता था एक साथ, एक टांग, दो काम करती रहे, ताकि टांग की स्ट्रेटेजी कोई पकड़ ना पाए। टांग से परेशान लोग, टांग को उखाड़ फेंकने के लिए, एकजुट हुए। अंत में हुआ यह कि अफसर उखड़ गया, मगर उसकी टांगें नहीं उखड़ पाईं। *

लघुकथा / गोविंद भारद्वाज

शक

शाम को ऑफिस से घर लौटते ही पति हरीश से उपासना ने कहा, 'देखिए, रोज शाम को पता नहीं पिताजी कहां जाते हैं और देर तक लौटते हैं।' 'कहां जाएंगे पार्क के अलावा। वहां इनके हम उम्र लोग मिलते होंगे। बस उनके साथ ही गपशप करते होंगे।' हरीश ने जवाब दिया।

'नहीं मुझे ऐसा नहीं लगता पिताजी कहीं और ही जाते हैं और मुझसे रोज अलग-अलग तरह का नाश्ता बनवाते हैं।' उपासना ने बताया। 'तुम भी बेवजह पिताजी पर शक कर रही हो। जो उनकी इच्छा है उन्हें करने दो। मां के चले जाने के बाद उनकी इच्छाओं का ख्याल हम नहीं रखेंगे तो भला कौन रखेगा?' हरीश ने समझाया। उसी समय पिताजी कमरे के अंदर आए और बोले, 'बहू आज गर्मा-गर्म समोसे बनाकर पैक कर दो, मुझे जाना है।' 'जी पिताजी।' उपासना ने धीरे से कहा। समोसे लेकर जैसे ही पिताजी घर से निकले, उपासना भी छुपते हुए उनके पीछे-पीछे चल दी। एक-डेढ़ किलोमीटर चलने के बाद पिताजी एक वृद्धाश्रम के भीतर चले गए। 'अच्छा तो यह बात है। अपने किसी यार-दोस्त को खिलाने लाते हैं पकवान।' उपासना मन ही मन बुदबुदाई। फिर दावाजे की ओट लेकर खड़ी हो गई। पिताजी किसी के साथ बैठकर समोसे खाते हुए ठहाके लगाने लगे। 'अरे, यह आवाज तो बहुत जानी-पहचानी लग रही है। कौन हैं वो, जिसके लिए पिताजी रोज नाश्ता बनवाकर लाते हैं?' मन ही मन बुदबुदाते हुए उपासना ने कमरे के भीतर झांका। 'अरे यह क्या!' वह अवाक रह गई। उसके पैरों तले की जमीन खिसक गई। 'मेरे बाबूजी वृद्धाश्रम में!' खुद से कहकर वह रोने लगी। दरअसल, उपासना के बाबूजी पिछले एक महीने से वृद्धाश्रम में रह रहे थे, जिसकी खबर केवल हरीश के पिताजी को ही थी। इसलिए वे रोज उपासना और हरीश से बताए बिना अपने समधी से मिलने यहां आया करते थे। *

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

स्त्री के आंतरिक द्वंद्व की कहानियां

यह सही है कि बदलते समय के साथ परिवार और घर से बाहर भी स्त्री की भूमिका में बड़ा बदलाव आया है। मगर कमोबेश उसकी पीड़ा, घुटन और त्रासदियां अब तक नहीं बदलीं। हां, उसके रूप जरूर बदले हैं। वरिष्ठ लेखिका कल्पना मनोरमा ने अपने कहानी संग्रह 'एक दिन का सफर' में स्त्री के इसी बहुआयामी द्वंद्व को बड़ी बारीकी और मार्मिकता से उकेरा है। इन कहानियों में उन्होंने बेशुमार दबावों, तनावों से आहत स्त्री की पीड़ा को स्वर दिया है। संग्रह की कहानियां सशक्त होने के साथ ही समकालीन संदर्भों में प्रासंगिक भी हैं। इसमें आज के दौर की महिलाओं के संघर्ष को भी देखा जा सकता है।

इस संग्रह की पहली कहानी 'कितनी कैदें' के किरदार की घुटन, जैसे आत्मा को निर्ममता से छील कर लहूलुहान कर देती है। मर्यादा, इज्जत के नाम पर किस तरह बेटियां बिना अपराध के बलि पर चढ़ा दी जाती हैं, इस कटु सत्य को कहानी बड़े मार्मिक तरीके से बयां करती है। शीर्षक कहानी 'एक दिन का सफर' में नायिका के भीतर का द्वंद्व उसका अपना नहीं है। यह स्त्री का सामूहिक द्वंद्व है। वही द्वंद्व, जिसका सामना उसे बाहर-भीतर हर कहीं करना होता है। 'आखिरी सिगरेट' दांपत्य जीवन में प्रेम की लालसा में घुटती एक स्त्री मन की कहानी है तो 'गुनिता की गुड़िया' कैद से बाहर निकलने की एक स्त्री की छटपटाहट को बयां करती है। 'दुख का बोनसाई' मायके से लड़की के अटूट रिश्ते की कहानी है। ये कहानियां ऐसी हैं, जिनसे सहज ही हर स्त्री जुड़ाव महसूस करेगी। सटीक-जीवंत रूपकों के प्रयोग से भाषा जीवंत हो उठी है। कहानियों की भाषा ही नहीं कहन का शिल्प भी बेहतरीन है। *

पुस्तक: एक दिन का सफर, **लेखिका:** कल्पना मनोरमा, **मूल्य:** 195 रुपए, **प्रकाशक:** अनन्य प्रकाशन, दिल्ली

मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर, श्रीशैलम

अन्नामलाईयार मंदिर, तिरुवन्नामलाई

मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर, मदुरै

धार्मिक स्थल

शिखर चंद जैन

आज पूरे देश में महाशिवरात्रि का पावन पर्व मनाया जा रहा है। इस अवसर पर देश भर के शिव-शक्ति मंदिरों में भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ता है। इस मौके पर हम आपको दक्षिण भारत में स्थित कुछ प्राचीन, भव्य और प्रसिद्ध शिव मंदिरों की विशेषताओं के बारे में बता रहे हैं। साथ ही गुजरात में स्थित अनोखे स्तंभेश्वर महादेव मंदिर के बारे में भी बता रहे हैं।

महादेव शिव-पार्वती को समर्पित भव्य-अनोखे-प्रसिद्ध मंदिर

जिस तरह उत्तर भारत में स्थित महाकालेश्वर, काशी विश्वनाथ, नागेश्वर महादेव, वैद्यनाथ आदि शिव मंदिरों के प्रति श्रद्धालुओं में असीम श्रद्धा है। उसी तरह दक्षिण भारत में भी कई अनोखे और भव्य मंदिर स्थित हैं। प्राचीन भारत में चोल, पल्लव और चालुक्य जैसे कई राजवंशों ने लंबे समय तक दक्षिण भारत पर शासन किया। अपने शासनकाल में उन राजाओं ने देवों के देव महादेव भगवान शिव के अत्यंत भव्य मंदिरों का निर्माण कराया। इन मंदिरों की अनोखी वास्तुकला दुनिया भर के पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करती है। इनमें से कुछ मंदिर देश में स्थित बारह ज्योतिर्लिंगों में भी सम्मिलित हैं। ये प्राचीन मंदिर श्रद्धालुओं और शिव भक्तों की आस्था के प्रमुख केंद्र हैं।

मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर, श्रीशैलम आंध्र प्रदेश: यह शिव मंदिर आंध्र प्रदेश के श्रीशैलम नामक छोटे से शहर में कृष्णा नदी के किनारे स्थित है। सातवाहन शासनकाल के इतिहास के अनुसार इस मंदिर का निर्माण काल द्वितीय शताब्दी के आस-पास माना जाता है। बाद में विजय नगर साम्राज्य के राजाओं और छत्रपति शिवाजी महाराज ने इस मंदिर में मंडप सहित कई संरचनाओं का निर्माण करवाया। यह मंदिर नल्लामलाई पहाड़ियों पर स्थित है, जो मंदिर को एक सुंदर पृष्ठभूमि प्रदान करता है। दक्षिण भारत में स्थित मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इस मंदिर की एक और विशेषता यह भी है कि यह देवी सती के 52 शक्ति पीठों में से एक है। यहां भगवान शिव की मल्लिकार्जुन अवतार में और माता पार्वती की भ्रामरंबा रूप में पूजा की जाती है। यहां महाशिवरात्रि, उगादि, कार्तिकाई, श्रवणमहोत्सवम धूमधाम से मनाते हैं।

तट मंदिर, महाबलीपुरम

तट मंदिर, महाबलीपुरम तमिलनाडु: तट मंदिर दक्षिण भारत के सबसे पुराने संरचनात्मक मंदिरों में से एक है। यह परिसर बंगाल की खाड़ी के तट पर तमिलनाडु के महाबलीपुरम में समुद्र के किनारे स्थित है। इसे अपनी द्रविड़ वास्तुकला और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। इस मंदिर का निर्माण पल्लव वंश के राजा नरसिंहवर्मन द्वितीय (राजसिंह) द्वारा ग्रेनाइट पत्थरों से कराया गया। इसके परिसर में तीन मंदिर हैं, जिनमें से दो भगवान शिव को और एक भगवान विष्णु को समर्पित है। मुख्य मंदिर पूर्व दिशा की ओर इस तरह से निर्मित है, जिससे सूर्योदय की किरणें शिवलिंग तक पहुंच सकें। सन् 1984 में इस मंदिर को महाबलीपुरम में स्मारकों के समूह के हिस्से के रूप में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया।

अन्नामलैयार मंदिर, तिरुवन्नामलाई तमिलनाडु: तमिलनाडु के तिरुवन्नामलाई शहर में स्थित अन्नामलैयार मंदिर बहुत प्रसिद्ध शिव मंदिर है। अरुणाचल पहाड़ियों की तलहटी में स्थित होने के कारण इसे अरुणाचलेश्वर मंदिर भी कहा जाता है। यह पंचभूत स्थलों में से एक है, जहां भगवान शिव अग्नि तत्व के रूप में विराजमान हैं। शिवलिंग को अग्निलिंग भी कहा जाता है और यहां भगवान शिव की पूजा अरुणाचलेश्वर के रूप में की जाती है। अन्नामलैयार मंदिर परिसर भारत के सबसे विशाल मंदिर परिसरों में से एक है। इस मंदिर का 11 मंजिला गोपुरम भारत के सबसे ऊंचे मंदिर गोपुरमों में से एक है, जिसकी ऊंचाई 66 मीटर है। इस मंदिर के मुख्य देवता अरुणाचलेश्वर और अन्नामलाई अम्मन हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं में वर्णित यह मंदिर अपनी उत्कृष्ट वास्तुकला के लिए जाना जाता है।

मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर, मदुरै तमिलनाडु: मंदिर नगरी के नाम से विख्यात मदुरै के सबसे भव्य मंदिरों में से एक अरुलमिगु मीनाक्षी अम्मन मंदिर है, जिसे मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर भी कहा जाता है। इस मंदिर की मुख्य देवी मीनाक्षी देवी हैं, जिन्हें देवी पार्वती का दिव्य अवतार माना जाता है। भगवान शिव की पूजा भगवान सुंदरेश्वरार के रूप में की जाती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह वह स्थान है, जहां सुंदरेश्वरार ने देवी मीनाक्षी से विवाह किया था। सन 1190 से 1205 ईसवी तक शासन करने वाले पांड्य राजा सदावर्मन कुलशेखरन प्रथम ने मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर का निर्माण करवाया था। यह मंदिर अपने गोपुरमों (मंदिर के शिखर), विशाल हॉल, मूर्तियों, नक्काशी और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। यह दक्षिण भारत के भव्य मंदिरों में से एक है। *

स्तंभेश्वर महादेव, वड़ोदरा गुजरात

दक्षिण भारत से दूर पश्चिमी राज्य गुजरात में भी एक प्रसिद्ध-विशिष्ट मंदिर स्तंभेश्वर महादेव स्थित है। इसमें एक ऐसा अनोखा शिवलिंग है, जिसका जलाभिषेक स्वयं समुद्र अपने जल से प्रतिदिन दो बार करता है। यह मंदिर अरब सागर में स्थित है और दिन में दो बार समुद्र में डूब कर अदृश्य हो जाता है। समुद्र का खारा जल इस शिवलिंग को कोई नुकसान नहीं पहुंचाता। यह मंदिर गुजरात के भरूच शहर से लगभग 35 किलोमीटर दूर सागर विस्तार के निकट जंबुसबुरता लुकालुका के नजदीक कावि, कंबोई गांव में स्थित है। इस मंदिर में स्वयंभू शिवलिंग की ऊंचाई 4 फीट और व्यास 2 फीट है। इस शिवलिंग के चारों ओर तट पर मंदिर का निर्माण सातवीं सदी के आस-पास हुआ था। माना जाता है कि चावड़ी के संतों द्वारा इसका निर्माण करवाया गया था। बाद में इस मंदिर का पुनर्निर्माण आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा भी करवाया गया था। शिव महापुराण, स्कंद पुराण जैसे पौराणिक ग्रंथों में भी इस मंदिर के शिवलिंग का उल्लेख मिलता है।

मंदिर के दर्शन तभी संभव हैं, जब समुद्र में ज्वार कम हो और समुद्र का पानी तट से उतरने लगे। इस मंदिर के ओझल होने का कारण समुद्र में उठा ज्वार होता है। ज्वार के कारण पानी के उद्वेग के समय शिवलिंग पूरी तरह से जलमग्न हो जाता है। मंदिर भी सागर की गहरी लहरों में समा जाता है। तब तट से भी मंदिर दिखना बंद हो जाता है। यहां आने वाले शिवभक्तों को प्रतिदिन के दर्शन के समय ज्वार की जानकारी दी जाती है, जिससे ज्वार-भाटे के समय की जानकारी रहने पर उन्हें किसी परेशानी का सामना न करना पड़े। स्तंभेश्वर महादेव मंदिर में हर अमावस्या को मेला लगता है। प्रदोष, पूर्णिमा, एकादशी को यहां पूरी रात पूजा-अर्चना होती है। भगवान शिव के इस अद्भुत मंदिर में देश-विदेश से श्रद्धालु और पर्यटक आते रहते हैं।

- प्रभा पारीक

भारत में भी धूमधाम से मनाते हैं तिब्बती नव वर्ष लोसर फेस्टिवल

पर्व-संस्कृति

अंजू जैन

हम सब पश्चिमी कैलेंडर के अनुसार 1 जनवरी को और हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र प्रतिपदा को नव वर्ष मनाते ही हैं। इनके अलावा कुछ प्रदेशों में तिब्बती नववर्ष लोसर भी मनाया जाता है। इसकी विशेषताओं पर एक नजर।

वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा को साकार होते देखने जैसा है तिब्बती नव वर्ष का भारत में धूमधाम से मनाया जाना। आज पूरी दुनिया में लोग एक-दूसरे के खान-पान, पहनावे और त्योहारों को अपना रहे हैं। भारत में पाश्चात्य नव वर्ष मनाया जाना तो बहुत सामान्य बात है लेकिन बहुत कम लोगों को पता होगा कि हमारे देश में तिब्बती नव वर्ष लोसर को भी धूमधाम से मनाया जाता है।

क्या है लोसर उत्सव: 'लोसर' दो तिब्बती शब्दों से मिलकर बना है, जिसमें 'लो' का अर्थ 'नया' और 'सर' का अर्थ 'वर्ष' होता है, जिसका सामूहिक अर्थ 'नया साल' है। लोसर तिब्बत, नेपाल और भूटान का सबसे महत्वपूर्ण बौद्ध त्योहार है। हमारे देश में यह मुख्य रूप से सिक्किम, लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में तिब्बती बौद्ध समुदाय एवं कुछ स्थानीय जनजातियों द्वारा मनाया जाता है। यह उत्सव जीवन के नवीनीकरण, समृद्धि और आध्यात्मिक शुद्धि का प्रतीक है।

सांस्कृतिक महत्व: लोसर उत्सव को हालांकि 'तिब्बती नव वर्ष' कहा जाता है, लेकिन इसकी जड़ें बौद्ध धर्म के आगमन से भी पुरानी हैं। यह मूलतः 'बोन' परंपरा का हिस्सा था, जहां लोग सर्दियों के अंत में प्रकृति को धन्यवाद देने के लिए धूप जलाते थे। बाद में, जब बौद्ध धर्म तिब्बत की मुख्य धारा बना, तो यह उत्सव आध्यात्मिक और धार्मिक रंगों में रंग गया। इस वर्ष लोसर 18 फरवरी, बुधवार को मनाया जाएगा। इसका मुख्य उत्सव आमतौर पर तीन दिनों तक चलता है, लेकिन यह त्योहार 15 दिनों तक मनाया जाता है।

साफ-सफाई का महत्व: लोसर में साफ-सफाई का खास महत्व है। सबसे पहले 'लाबा लोसर' मनाया जाता है, जिसमें घरों की पुताई और सफाई की जाती है। सभी पुरानी, अनुपयोगी वस्तुओं को हटा दिया जाता है। मान्यता है कि ऐसा करने से घर में अच्छा स्वास्थ्य, शांति और समृद्धि आती है। इस अवसर पर घरों को सजाया जाता है और नई प्रार्थना पताकाएं फहराई जाती हैं।

विशेष खान-पान: लोसर पर विशेष भोजन जैसे 'खप्से' (तले हुए बिस्कुट) और 'गुथुक' (एक प्रकार का नूडल सूप) तैयार किए जाते हैं। अमावस्या की पूर्व संध्या पर परिवार 'गुथुक' पीते हैं।

तीन दिनों तक विशेष कार्यक्रम: लोसर उत्सव के पहले दिन सूर्योदय से पहले ही मठों में शंखों की आवाज गूंजने लगती है। इस दिन लोग अपने धर्मगुरुओं का आशीर्वाद लेते हैं। देवताओं और आत्माओं के लिए धार्मिक अनुष्ठान करते हैं, जिसमें घरों में घी के दीये जलाना और बौद्ध धर्मग्रंथों का पाठ करना शामिल है। दलाई लामा और अन्य उच्च लामाओं की लंबी उम्र के लिए प्रार्थना की जाती है। घरों में 'चेमार' (सत्तू और मक्खन का मिश्रण) का भोग लगाया जाता है।

दूसरा दिन 'ग्यालपो लोसर' (राजाओं का दिन) होता है। यह दिन सामुदायिक मिलन का होता है। ऐतिहासिक रूप से यह दिन शासकों और उनके मंत्रियों के बीच संवाद का होता था। आज के संदर्भ में, यह सार्वजनिक समारोहों, नाच-गाने और मेलों का दिन है। लद्दाख और धर्मशाला की सड़कों पर पारंपरिक पोशाक 'चूबा' पहने लोग एक-दूसरे को 'लोसर ताशी देलेक' (नए साल की शुभ मंगलकामनाएं) कहते हैं।

तीसरा दिन 'चो-क्योंग लोसर' (धर्म रक्षकों का दिन) है। इस दिन लोग पहाड़ की चोटियों पर जाकर 'धूप' (सांग) जलाते हैं और प्रार्थना झंडे (लुंगता) फहराते हैं। ये झंडे शांति, करुणा और शक्ति के प्रतीक हैं।

मुखौटा नृत्य (छम): लोसर उत्सव का सबसे रोमांचक पहलू मठों में होने वाला 'छम' या मुखौटा नृत्य है। यह नृत्य बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। रंगीन रेशमी कपड़े और भयानक दिखने वाले मुखौटे पहनकर लामा नृत्य करते हैं। ड्रम और लंबी झांझों की थाप पर किया जाने वाला यह नृत्य दर्शकों को एक अलग ही आध्यात्मिक दुनिया में ले जाता है। *

फैशन जोन

प्रतिमा अरोड़ा

बदलते मौसम के अनुसार हमारे ड्रेसिंग सेंस में बदलाव होने लगता है। यही वजह है कि इन दिनों यंगस्टर्स शर्ट और जैकेट के कॉम्बो यानी शैकेट पहनना काफी पसंद कर रहे हैं। इसकी क्या है खासियतें और यंगस्टर्स इन्हें क्यों पसंद करते हैं, इस बारे में आप भी जरूर जानना चाहेंगे।

बदलते मौसम में परफेक्ट शैकेट से मिले स्मार्ट लुक

सर्दी का मौसम जैसे-जैसे विदा ले रहा है, मौसम हल्का गर्म होने लगा है, तो फैशन की दुनिया भी करवट ले रही है। भारी कोट, मोटे स्वेटर, अब वार्डरोब या अलमारियों में जाने लगे हैं। इनके स्थान पर हल्के स्टाइलिश और बहुपयोगी शर्ट+जैकेट या शैकेट का क्रेज दिनोंदिन बढ़ने लगा है। शैकेट वास्तव में शर्ट की आरामदेह संरचना और जैकेट की मजबूती का मिश्रण होता है। यह न तो पूरी तरह से शर्ट और न ही पूरी तरह से जैकेट बल्कि दोनों का संतुलित रूप होता है। इसीलिए यंगस्टर्स के बीच यह तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

इसलिए युवाओं को है पसंद: फरवरी और मार्च का महीना वासंती मौसम के महीने होते हैं। इस दौरान न ज्यादा ठंड और न ही ज्यादा गर्मी होती है। ऐसे समय में शैकेट युवाओं के लिए परफेक्ट विकल्प बनकर आता है। लेयरिंग में आसानी भी एक बड़ा कारण है कि यह तेजी से ट्रेंडी हो रहा है। दरअसल टी-शर्ट, फुलस्लीव शर्ट या पतली हुडी के ऊपर शैकेट पहनकर स्टाइलिश लुक मिल जाता है। इसे पहनने का एक फायदा यह भी है कि यह शरीर पर टाइटनेस के साथ चिपकता नहीं है। शरीर लंबे समय तक इसके साथ कंफर्टेबल रहता है और सबसे बड़ी बात यह है कि यह यूनिसेक्स अपील रखता है। यह लड़कों और लड़कियों दोनों पर समान रूप से सूट करता है। इसीलिए खासतौर पर कॉलेज गोइंग यंगस्टर्स को शैकेट बहुत पसंद आ रहा है। इसका फैब्रिक पतला होता है। यह फिट होता है लेकिन बहुत टाइट नहीं होता है। यह ठंड से बचाता है लेकिन बहुत गर्म अहसास नहीं कराता है। इसके बटन और सिलाई काफी मजबूत होती है। इसका वजन हल्का होता है ताकि लेयरिंग को आसान बनाए। इन्हीं वजहों से यंगस्टर्स इन्हें पहनना पसंद करते हैं। शैकेट का ट्रेंड सिर्फ अपने देश में ही नहीं पूरी दुनिया के युवाओं को भा रहा है, क्योंकि अगर फैशन इतिहास को देखें तो शैकेट की जड़ें वर्किंग मैन वियर और मिलिट्री क्लोदिंग से जुड़ी हुई हैं।

बनता है इन फैब्रिक्स से: शैकेट आमतौर पर कॉटन ट्विल, डेनिम, कॉर्डरॉय और वूलेन मिश्रित फैब्रिक से बने होते हैं। हल्के वजन वाले कॉटन मिक्स शैकेट इस बदलते मौसम में ज्यादा पसंद किए जाते हैं। अगर थोड़ी ठंड महसूस हो तो वूलेन मिक्स्ड शैकेट आप वियर कर सकते हैं। वैसे तो आपको शैकेट्स में कलर्स की ढेरों वैरायटीज मिल जाएंगी। आप उनमें से अपनी पसंद का कोई कलर सेलेक्ट कर सकते हैं। लेकिन अगर शैकेट में कलर और पैटर्न ट्रेंड की बात करें तो ऑलिव ग्रीन, टैन ब्राउन, चारकोल ग्रे, डेनिम ब्लू कलर के शैकेट्स बहुत अट्रैक्टिव लगते हैं। अब यंगस्टर्स के बीच ब्राइट कलर वाले शैकेट्स के बजाय सॉफ्ट और अर्थी टोन वाले शैकेट्स की मांग ज्यादा बढ़ रही है, क्योंकि ये ज्यादा मैचिंग फ्रेंडली होते हैं। जहां तक शैकेट में ट्रेंडी पैटर्न और डिजाइन की बात है तो चेक्स प्रिंटेड और प्लेड पैटर्न यंगस्टर्स के बीच काफी पसंद किए जाते हैं।

लगातार बढ़ रही है डिमांड: हाल के सालों में बदलते मौसम में बाजार में शैकेट की लगातार मांग बढ़ रही है। क्योंकि कुछ वर्षों में ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और लोकल ब्रांड ने अपनी नियमित क्लेक्शन में भी शैकेट को शामिल किया है। फैशन रिटेल से जुड़े जानकारों के मुताबिक यह ट्रांजिशनल वियर यानी बदलते मौसम के समय का फैशन हर साल 15 से 20 फीसदी तक वृद्धि हासिल कर लेता है। इसकी बढ़ती मांग का एक कारण यह है कि यह मीडियम रेंज में उपलब्ध होता है। वियर करने पर बहुत सोबर और एलीगेंट लुक देता है। इसके अगर बजट रेंज की बात करें तो शैकेट 800 से 1500 रुपए में मिल जाता है। मिड रेंज की बात करें तो 1500 से 3000 रुपए के बीच इसका रेंज देखा जा सकता है। जबकि प्रीमियम रेंज की बात करें तो 3000 रुपए से ऊपर आपको फाइन क्वालिटी के शैकेट मिल जाते हैं। इसकी यह रेंज दर्शाती है कि हर वर्ग के यंगस्टर्स के लिए शैकेट्स उपलब्ध हैं। यही कारण है कि अपने देश में इसकी डिमांड बदलते मौसम में बढ़ जाती है। इसकी मांग के पीछे एक कारण सस्टेनेबिल्टी भी है। कई ब्रांड अब रि-साइकिल्ड फैब्रिक और आर्गेनिक कॉटन से शैकेट बना रहे हैं। उससे पर्यावरण पर कम असर पड़ता है और युवावर्ग को यह सोच पसंद आती है कि वे स्टाइल के साथ-साथ अपनी सामाजिक जिम्मेदारियां भी पूरी कर रहे हैं।

पर्सनालिटी को देता है नया लुक: शैकेट की एक खासियत यह है कि यह तमाम दूसरे फैशन के साथ मर्ज नहीं हो रहा बल्कि एक अलग से पहचान बनाने में कामयाब है। आज के दौर में यंगस्टर्स फैशन को केवल कोई भी ड्रेस पहनने तक सीमित नहीं मानते बल्कि उससे अपने आराम और प्रभाव की तुलना करते हैं। शैकेट इन दोनों कसौटियों में खरा उतरता है। यही कारण है कि यह युवाओं को पसंद आता है। इनसे उन्हें स्मार्ट लुक मिलता है। *

फिल्म 'विधाता' में दिलीप कुमार-शम्मी कपूर

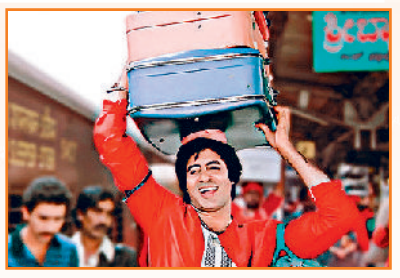
फिल्म 'कुली' के सीन में अमिताभ बच्चन

'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का क्लाइमेक्स सीन

सिने ट्रेंड

अशोक वाधवाणी

रेल में सफर का अलग ही मजा होता है। देश के करोड़ों लोगों की लाइफलाइन से जुड़ी रेलगाड़ी को बॉलीवुड फिल्मों में भी खूब दिखाया जाता रहा है। खास बात यह है कि फिल्मों में ट्रेन वाले सीन और सॉन्ग्स खूब पॉपुलर भी हुए हैं। यहां बात कुछ ऐसी ही फिल्मों की, जिनके टाइटल, सीन या सॉन्ग में ट्रेन मौजूद रही है।

फिल्मों में खूब हुए पॉपुलर ट्रेन बेस्ड सींस-सॉन्ग्स

अपने देश में आज भी अधिकांश लोगों के लिए रेल यात्रा सबसे सुविधाजनक और सस्ती मानी जाती है। यही वजह है कि हिंदी फिल्मों में भी मालगाड़ी से लेकर, यात्री गाड़ी और अत्याधुनिक ट्रेनें भी दिखाई जाती रही हैं। ट्रेन यात्रा से जुड़े दृश्य और गीत मन में अमिट छाप छोड़ते हैं। एंटरटेनमेंट के लिए रेल में रोमांस, रोमांच, रहस्य के अलावा रेलवे स्टेशन, प्लेटफॉर्म, रेल की पटरियां, कुली आदि बहुत कुछ हिंदी फिल्मों में दिखाए जाते रहे हैं।

ट्रेन से जुड़े फिल्मों के नाम: बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में बनी हैं, जिनके टाइटल ट्रेन या रेलवे के इर्द-गिर्द रखे गए हैं। पुराने जमाने की नायिका नादिया की कई चर्चित फिल्मों के नाम ट्रेन के नाम पर ही रखे गए। उनमें से प्रमुख हैं 'मिस फ्रंटियर मेल'(1936), 'पंजाब मेल'(1939), 'दिल्ली एक्सप्रेस' (1949)। इसी क्रम में 'प्लेटफॉर्म' (1955), '27 डाउन' (1974), 'द ट्रेन' (1971), 'कुली' (1984), 'द बर्निंग ट्रेन' (1980), 'चेन्नई एक्सप्रेस' (2000) जैसी फिल्मों के टाइटल्स से ही पता चलता है कि फिल्म की कहानी रेल के इर्द-गिर्द घूमने वाली होगी।

फिल्मी दृश्यों में ट्रेन: बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में बनीं, जिनकी शुरुआत में ही रेल दिखाई गई, जैसे- दोस्त (1974)। कुछ फिल्मों का क्लाइमैक्स रेलवे स्टेशन पर फिल्माया गया है, जैसे- 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे'(1995)। इसके अलावा शाहरुख खान की कुछ और फिल्मों में भी ट्रेन की अपनी विशेष भूमिका रही है। 'दिल से', 'स्वदेश', 'वीर-जारा', 'रईस', 'पठान', 'जवान' आदि कई फिल्मों में लाजवाब रेल सीन फिल्माए गए हैं।

धर्मेंद्र का रेल कनेक्शन: पिछले वर्ष दिवंगत हुए सदाबहार अभिनेता धर्मेंद्र की शुरुआती फिल्में जैसे-'शोला और शबनम', 'आपकी परछाइयां', 'फूल और पत्थर' से लेकर 'दोस्त' आदि में रेल का रोल इंपॉर्टेंट रहा। दिलचस्प बात यह है कि धर्मेंद्र ने फिल्मों में आने से पहले कुछ समय तक रेलवे में क्लर्क की नौकरी भी की थी।

ट्रेन में फिल्माए गए कुछ यादगार दृश्य: फिल्मों में ट्रेन के कई ऐसे दृश्य फिल्माए गए हैं, जो यादगार बन गए। 'गांधी' (1982) में एक छोटा सा सीन है, जोकि गांधी जी के जीवन का टर्निंग पॉइंट बना। दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन के फर्स्ट क्लास में यात्रा करने के कारण एक अंग्रेज, नाराज होकर, गांधीजी को एक स्टेशन पर सामान समेत डिब्बे के बाहर फेंक देता है। इसके अलावा इसी फिल्म में गांधीजी की ट्रेन से यात्रा के कुछ और सीन भी हैं। 'जब वी मेट' (2007) में फिल्म का नायक मुंबई से ट्रेन में चढ़ता है। रतलाम स्टेशन पर नायिका की ट्रेन छूटती है। आगे दोनों की ट्रेन जर्नी, रेल कर्मियों के साथ उनका वार्तालाप आदि कई रोचक, मनोरंजक दृश्य हैं। 'बड़े मियां, छोटे मियां' (1998) में अमिताभ बच्चन और गोविंदा ट्रेन की बोगी के सभी यात्रियों का सामान, चालाकी से लूट लेते हैं। कई कलाकारों ने फिल्म में रेल कर्मियों के रोल निभाए हैं। 'अजनबी' (1974) में राजेश खन्ना स्टेशन मास्टर बने हैं। 'विधाता' (1982) में दिलीप कुमार और शम्मी कपूर ट्रेन ड्राइवर बने हैं। ओम प्रकाश ने 'जूली' (1975) में ट्रेन ड्राइवर का रोल निभाया है।

ट्रेन पर आधारित गीत: ट्रेन के भीतर, ट्रेन की छत पर या ट्रेन के इर्द-गिर्द कई फिल्मों के गीत भी फिल्माए गए हैं, जो काफी लोकप्रिय हुए। 'आओ बच्चो तुम्हें दिखाएं झांकी हिंदुस्तान की' ट्रेन में फिल्माए गए फिल्म 'जागृति' (1954) के इस गाने में अध्यापक की भूमिका में अभि भट्टाचार्य, छात्रों को भारत देश के इतिहास से अवगत करवाते हैं। 'आशीर्वाद' (1968) में अशोक कुमार द्वारा गाया और उन्हीं पर फिल्माया रैप सांग 'रेलगाड़ी छुक-छुक-छुक' बॉलीवुड का शुरुआती रैप सॉन्ग है। इसके कई रिमिक्स भी बन चुके हैं। 'दिल से' (1998) में एक नया, अनोखा प्रयोग किया गया था। फिल्म मे 'चल छैंया छैंया' गीत रेल के डिब्बों पर पिक्चराइज किया गया डांस सॉन्ग है। 'दोस्त' (1974) का गीत 'गाड़ी बुला रही है, सीटी बजा रही है...' आज भी लोकप्रिय है। फिल्म 'कुली' (1983) में अमिताभ बच्चन पर फिल्माए गए गीत 'सारी दुनिया का बोझ हम उठाते हैं' में भी ट्रेन और रेलवे प्लेटफॉर्म के दृश्य नजर आते हैं। इन लोकप्रिय गीतों के अलावा भी रेल में हर मूड, सिचुएशन के गानों, दृश्यों की लंबी लिस्ट है। *